RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 042
दि. 14.11.2025,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

दिल्ली धमाका जांच में नया मोड़: कार्डियोलॉजिस्ट की गिरफ्तारी, देशभर में छापेमार कार्रवाई तेज

(जीएनएस)। कानपुर/श्रीनगर/नई दिल्ली/गुवाहाटी। दिल्ली के लाल किले के पास हुए भीषण धमाके की जांच हर घंटे नए खुलासे कर रही है। राष्ट्रीय राजधानी को हिला देने वाले इस आतंकी हमले के सिलसिले में अब जांच एजेंसियों ने एक नामी हृदय रोग विशेषज्ञ को हिरासत में लिया है। कानपुर के हृदयरोग संस्थान में तैनात कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. मोहम्मद आरिफ को बुधवार देर रात उनके घर से गिरफ्तार किया गया। बताया जा रहा है कि वे मुख्य आरोपित डॉक्टर शाहीन सिद्दीकी और उसके भाई परवेज से लगातार संपर्क में थे।

जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले के मूल निवासी डॉ. आरिफ ने तीन महीने पहले ही कानपुर में पदभार संभाला था। उनकी नियुक्ति प्रतिष्ठित हृदयरोग संस्थान में हुई थी, जहां वे शांत और सीमित स्वभाव के डॉक्टर के रूप में जाने जाते थे। लेकिन जांच एजेंसियों का कहना है कि उनकी डिजिटल गतिविधियों और बातचीत के रिकॉर्ड से कई संदिग्ध सुराग मिले हैं। एटीएस ने उनके घर से लैपटॉप, मोबाइल और दस्तावेज जब्त कर लिए हैं। फिलहाल उन्हें दिल्ली ले जाकर पूछताछ की जा रही है, जहां पहले से गिरफ्तार डॉक्टर शाहीन और परवेज से आमने-सामने बैठाकर जिरह की जाएगी।

एटीएस और केंद्रीय खुफिया एजेंसियों ने कानपुर में कई स्थानों पर छापे मारे हैं। सूत्रों का कहना है कि डॉक्टर आरिफ कुछ ऑनलाइन ग्रुप्स से भी जुड़ा हुआ था, जिन पर राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों की निगाह पहले से थी। इन ग्रुप्स के जरिये न

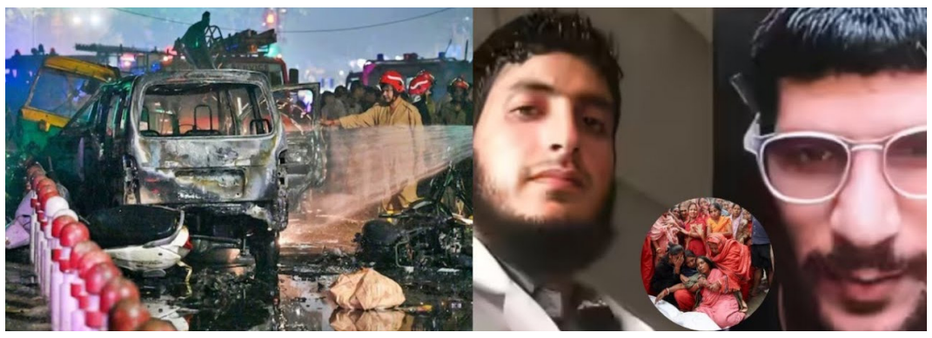

केवल विचारधारा बल्कि वित्तीय सहयोग और गतिविधियों के समन्वय के भी संकेत मिले हैं।

कश्मीर में भी जांच की आंच तेज हो गई है। काउंटर इंटेलिजेंस कश्मीर (सीआईके) ने श्रीनगर और उसके आसपास के 13 ठिकानों पर एक साथ छापेमारी की है। यह कार्रवाई जैश-ए-मुहम्मद नेटवर्क की सक्रियता को ध्यान में रखकर की जा रही है। सीआईडी की खुफिया रिपोर्ट के आधार पर यह अभियान शुरू किया गया, जिसमें कई डिजिटल डिवाइस, दस्तावेज और संदिग्ध वस्तुएं जब्त की गई हैं। सुरक्षा एजेंसियां यह पता लगाने की कोशिश कर रही हैं कि दिल्ली धमाके के सूत्र जम्मू-कश्मीर से कैसे जुड़े।

इस बीच, दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ने सुरक्षा कारणों से लाल किला मेट्रो स्टेशन को अगली सूचना तक बंद कर दिया है। वायलेट लाइन का यह स्टेशन न केवल ऐतिहासिक लाल किला बल्कि जामा मस्जिद और चांदनी चौक क्षेत्र का मुख्य प्रवेश द्वार है। इसके बंद होने से हजारों यात्रियों को असुविधा झेलनी पड़ रही है। डीएमआरसी ने स्पष्ट किया है कि जांच पूरी होने और सुरक्षा एजेंसियों से अनुमति मिलने के बाद ही स्टेशन दोबारा खोला जाएगा।

सोमवार शाम हुए इस कार विस्फोट में अब तक 13 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि कई गंभीर रूप से घायल हैं। धमाके की जांच में यह स्पष्ट होता जा रहा है कि साजिश का दायरा केवल दिल्ली तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके तार देश के अलग-अलग हिस्सों से जुड़े हैं।

दूसरी ओर असम में भी सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही भड़काऊ पोस्टों पर पुलिस ने कड़ी कार्रवाई शुरू कर दी है। अब तक 15 लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जिन्होंने धमाके के बाद सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक या हिंसा भड़काने वाले संदेश पोस्ट किए थे। गिरफ्तार लोगों में बंगाईगांव, हैलाकांदी, लखीमपुर, बरपेटा, होजाई, कामरूप और दक्षिण सालमारा जिलों के युवक शामिल हैं। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने कहा है कि "जो भी लोग हिंसा को उचित ठहराने या आतंकवाद की पैरवी करेंगे, उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। असम में ऐसी किसी गतिविधि के लिए कोई जगह नहीं है।"

देश के कई हिस्सों में इस विस्फोट के बाद सुरक्षा एजेंसियों ने हाई अलर्ट जारी कर दिया है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और असम में विशेष टीमें लगातार सक्रिय हैं। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) भी अब औपचारिक रूप से जांच में शामिल हो रही है। देशभर में चल रही इस संयुक्त कार्रवाई का उद्देश्य न केवल अपराधियों को पकड़ना है बल्कि उस छिपे नेटवर्क को उजागर करना है जो भारत की स्थिरता को चुनौती देने की कोशिश कर रहा है।

यह मामला अब राष्ट्रीय सुरक्षा की सबसे बड़ी प्राथमिकता बन गया है, और हर घंटे नए सुराग जांच एजेंसियों को गहराई तक ले जा रहे हैं। दिल्ली का यह धमाका सिर्फ एक घटना नहीं रहा, बल्कि देश की सुरक्षा व्यवस्था के लिए एक चेतावनी बनकर सामने आया है।

कलकत्ता हाईकोर्ट का ऐतिहासिक फैसला : मुकुल राय की विधायकी रद्द, दल-बदल कानून की सख्त व्याख्या से पश्चिम बंगाल की राजनीति में हलचल

(जीएनएस)। कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजनीति में गुरुवार को एक बड़ा और ऐतिहासिक घटनाक्रम देखने को मिला जब कलकत्ता उच्च न्यायालय ने कृष्णनगर उत्तर विधानसभा सीट से निर्वाचित विधायक मुकुल राय की सदस्यता रद्द कर दी। न्यायमूर्ति देबांशु बसाक और न्यायमूर्ति शब्बर राशिदी की खंडपीठ ने यह फैसला सुनाते हुए कहा कि मुकुल राय का भाजपा के टिकट पर निर्वाचित होने के बाद तृणमूल कांग्रेस में दोबारा शामिल होना भारतीय संविधान के दसवें अनुसूची — यानी दल-बदल विरोधी कानून — का स्पष्ट उल्लंघन है। यह फैसला पश्चिम बंगाल ही नहीं, बल्कि पूरे देश के राजनीतिक और संवैधानिक परिदृश्य में एक मील का पत्थर माना जा रहा है। अदालत ने साफ कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनादेश का अपमान किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। जिस जनता ने मुकुल राय को भाजपा प्रत्याशी के रूप में चुना, उनके मत का सम्मान होना चाहिए था, न कि व्यक्तिगत राजनीतिक स्वार्थ के चलते पार्टी बदलने का कदम उठाया जाना चाहिए था।

मुकुल राय, जो तृणमूल कांग्रेस के संस्थापक नेताओं में से एक रहे हैं, एक समय ममता बनर्जी के सबसे भरोसेमंद रणनीतिकार माने जाते थे। उन्हें पार्टी का "चाणक्य" कहा जाता था। 2017 में जब उन्होंने तृणमूल से नाता तोड़कर भाजपा का दामन थामा, तो वह बंगाल की राजनीति में बड़ा झटका था। 2021 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने भाजपा के टिकट पर जीत हासिल की, लेकिन सत्ता में भाजपा की हार के बाद वे फिर 2022 में तृणमूल कांग्रेस में लौट आए।

यह कदम विपक्ष और संवैधानिक विशेषज्ञों के निशाने पर आ गया। नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी ने इसे दल-बदल कानून का खुला उल्लंघन बताते हुए विधानसभा अध्यक्ष को मुकुल राय की सदस्यता रद्द करने का आवेदन दिया। मगर अध्यक्ष ने उस समय मुकुल राय की सदस्यता को बरकरार रखा। इसके खिलाफ शुभेंदु अधिकारी ने उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया, जहाँ अब अदालत ने अध्यक्ष के निर्णय को पलटते हुए राय की सदस्यता रद्द कर दी है। न्यायालय के फैसले में कहा गया कि विधायिका की पवित्रता और मतदाता के जनादेश की रक्षा सर्वोपरि है। कोई भी जनप्रतिनिधि, यदि किसी राजनीतिक दल के टिकट पर चुना गया है, तो वह जनादेश केवल उसकी व्यक्तिगत इच्छा पर नहीं बल्कि उस पार्टी के साथ जुड़ा होता है, जिसने जनता के बीच उसे प्रतिनिधि बनाकर भेजा। ऐसे में दल बदलना जनादेश के साथ विश्वासघात के समान है। फैसले के बाद शुभेंदु अधिकारी ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि "यह न्याय का क्षण है और लोकतंत्र के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित होगा। न्याय ने अंततः जीत हासिल की।" उन्होंने कहा कि यह फैसला यह संदेश देता है कि जनादेश से खिलवाड़ करने की किसी को अनुमति नहीं दी जाएगी, चाहे वह कितना ही प्रभावशाली नेता क्यों न हो।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह फैसला पश्चिम बंगाल की राजनीति में नए समीकरण पैदा कर सकता है। तृणमूल कांग्रेस के लिए यह प्रतीकात्मक रूप से एक झटका है, क्योंकि मुकुल राय कभी पार्टी की रणनीति के प्रमुख स्तंभ माने जाते थे। वहीं, भाजपा इसे अपनी नैतिक जीत के रूप में देख रही है और इसे राजनीतिक शुचिता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बता रही है।

कानूनी दृष्टि से भी यह फैसला महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने दल-बदल विरोधी कानून की व्याख्या को और स्पष्ट कर दिया है। विशेषज्ञों के अनुसार, यह निर्णय भविष्य में उन सभी मामलों के लिए नज़ीर साबित हो सकता है जहां निर्वाचित प्रतिनिधि जनादेश की भावना की अवहेलना करते हुए अपनी राजनीतिक सुविधा के अनुसार दल बदलते हैं।

इस फैसले के साथ मुकुल राय की राजनीतिक यात्रा एक नए मोड़ पर पहुंच गई है। उन्होंने कभी बंगाल की सत्ताधारी राजनीति को दिशा दी थी, लेकिन अब वे खुद संविधान की उस धाराओं के शिकंजे में आ गए हैं जो लोकतंत्र की जड़ों को सुरक्षित रखने के लिए बनी हैं।

इथियोपियाई विमान हादसे में शिखा गर्ग के परिवार को मिलेगा 2.8 करोड़ डॉलर मुआवजा, बोइंग की बड़ी जिम्मेदारी तय

(जीएनएस)। वाशिंगटन। अमेरिकी अदालत ने विमानन इतिहास के सबसे चर्चित मामलों में से एक में महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए बोइंग कंपनी को 2019 के इथियोपियाई एयरलाइंस हादसे में भारतीय मूल की पर्यावरण कार्यकर्ता शिखा गर्ग के परिवार को 2.8 करोड़ डॉलर से अधिक का मुआवजा देने का आदेश दिया है। अदालत का यह निर्णय न केवल पीड़ित परिवारों के लिए न्याय की दिशा में एक बड़ी जीत माना जा रहा है, बल्कि वैश्विक स्तर पर विमान सुरक्षा मानकों और कॉरपोरेट जवाबदेही पर भी गहरा असर डालने वाला है।

यह मुकदमा शिकागो की संघीय अदालत में चला, जहां सभी पक्षों ने अंततः समझौते पर सहमति जताई। इस समझौते के अनुसार, शिखा गर्ग के परिजनों को कुल 3.585 करोड़ डॉलर की राशि दी जाएगी, जिसमें ब्याज और कानूनी खर्च शामिल हैं। अदालत ने स्पष्ट किया कि बोइंग इस निर्णय के खिलाफ अपील नहीं करेगा, जिससे कंपनी की गलती और लापरवाही की औपचारिक स्वीकृति सामने आई है।

शिखा गर्ग, जो संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण

सम्मेलन में भाग लेने के लिए इथियोपिया की राजधानी आदिस अबाबा से नैरोबी जा रही थीं, 10 मार्च 2019 को उड़ान भरने के कुछ ही मिनट बाद विमान दुर्घटना में मारी गईं। दुर्घटनाग्रस्त विमान बोइंग 737 मैक्स 8 मॉडल का था, जिसकी स्वचालित नियंत्रण प्रणाली (MCAS) में गंभीर तकनीकी खामी पाई गई थी। यही खामी 2018 में इंडोनेशिया की लायन एयर फ्लाइट 610 की तबाही का कारण भी बनी थी।

मुकदमे के दौरान अभियोजन पक्ष ने तर्क दिया कि बोइंग को पहले से पता था कि उसके विमान के डिजाइन में तकनीकी जोखिम मौजूद हैं, फिर भी उसने न तो पायलटों को पर्याप्त प्रशिक्षण दिया और न यात्रियों को संभावित खतरे की जानकारी दी। कंपनी पर यह भी आरोप लगाया गया कि उसने बाजार प्रतिस्पर्धा के दबाव में सुरक्षा मानकों से समझौता किया, जिससे दो वर्षों में 346 लोगों की जानें गईं।

वकील शैनिन स्पेक्टर और एलिजाबेथ क्रॉफर्ड ने कहा कि यह फैसला केवल एक मुआवजे का नहीं, बल्कि एक संदेश है कि तकनीकी दिग्गज कंपनियां मानवीय जान की कीमत पर लाभ कमाने की प्रवृत्ति नहीं अपना सकतीं। उन्होंने बताया कि बोइंग ने अदालत में अपनी गलती स्वीकार करते हुए कहा कि वह अब अपने विमानों की सुरक्षा प्रणाली और पायलट प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यापक सुधार करेगा। बोइंग की प्रवक्ता ने एक बयान जारी कर कहा, "हम उन सभी परिवारों के प्रति गहरा शोक व्यक्त करते हैं जिन्होंने इन दोनों हादसों में अपने प्रियजनों को खोया। हमारी कंपनी ने इन दुर्घटनाओं से मिले सबक के आधार पर कई तकनीकी बदलाव किए हैं और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की प्रतिबद्धता दोहराई है।"

अब तक बोइंग ने 737 मैक्स से जुड़ी 90 प्रतिशत से अधिक कानूनी याचिकाओं का निपटारा कर लिया है और अरबों डॉलर का मुआवजा पीड़ित परिवारों को दिया जा चुका है। फिर भी यह मामला एक प्रतीक बन गया है कि आधुनिक तकनीकी युग में कॉरपोरेट जिम्मेदारी और पारदर्शिता कितनी महत्वपूर्ण है। शिखा गर्ग की स्मृति में भारत और अमेरिका दोनों देशों में पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किए हैं। उन्हें एक समर्पित और संवेदनशील कार्यकर्ता के रूप में याद किया जा रहा है, जिनकी असमय मृत्यु ने न केवल विमानन जगत को झकझोरा बल्कि वैश्विक सुरक्षा नीतियों में भी स्थायी सुधार की मांग को जन्म दिया।

शाही इमाम सैयद अहमद बुखारी का सख्त बयान : "सभ्य समाज में आतंकवाद की कोई जगह नहीं, पूरा मुस्लिम समाज राष्ट्र की एकता के साथ खड़ा है"

(जीएनएस)। नई दिल्ली। दिल्ली में लाल किले के पास हुए भीषण विस्फोट के बाद देशभर में फैले आक्रोश और शोक के बीच जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अहमद बुखारी ने एक सशक्त और जिम्मेदार बयान जारी किया है। उन्होंने घटना की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि सभ्य समाज में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं हो सकती और ऐसे कृत्य इस्लाम के उस बुनियादी सिद्धांत के खिलाफ हैं जो मानवता, करुणा और शांति की शिक्षा देता है।

इमाम बुखारी ने कहा कि यह समय पूरे देश को एकजुट होकर आतंकवाद के खिलाफ खड़े होने का है। उन्होंने स्पष्ट कहा— "हमारा दिल उन परिवारों के साथ है जिन्होंने इस हमले में अपने प्रियजनों को खो दिया। उनका दर्द हमारा दर्द है। किसी भी निर्दोष की हत्या इस्लाम में हराम है। जो लोग आतंकवाद के रास्ते पर चलते हैं, वे न सिर्फ कानून बल्कि अल्लाह की नजर में भी गुनाहगार हैं।"

उन्होंने पूरे मुस्लिम समाज की ओर से पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि आज भारत का हर मुसलमान देश की सुरक्षा, शांति और एकता के साथ खड़ा है। उन्होंने विशेष रूप से कश्मीर, असम, केरल, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के मुसलमानों से अपील की कि वे किसी भी भड़काऊ बयान या अफवाह से दूर रहें और देश की अखंडता को सबसे ऊपर रखें। इमाम बुखारी ने कहा कि आतंकवाद किसी धर्म का नहीं होता, बल्कि यह एक मानसिक बीमारी है जो मानवता को खंडित करती है। उन्होंने कहा कि भारत की आत्मा सहिष्णुता, भाईचारे और धर्मनिरपेक्षता पर टिकी है और यही मूल्य हमारे समाज की ताकत हैं।

"अगर कोई व्यक्ति या संगठन इन मूल्यों को नष्ट करने की कोशिश करता है, तो वह इस देश की जड़ों पर प्रहार करता है," उन्होंने जोड़ा।

उन्होंने केंद्र सरकार और जांच एजेंसियों से अपील की कि मामले की जांच पूरी निष्पक्षता और पारदर्शिता के साथ होनी चाहिए ताकि किसी निर्दोष को सजा न मिले और असली गुनाहगारों को जल्द से जल्द सख्त सजा दी जा सके। इमाम बुखारी ने यह भी कहा कि किसी भी प्रकार का राजनीतिक लाभ या सांप्रदायिक ध्रुवीकरण इस त्रासदी को और गंभीर बना सकता है, इसलिए सभी दलों और नेताओं को इस समय संयम और जिम्मेदारी से काम लेना चाहिए।

उन्होंने अपने बयान के अंत में कहा, "देशवासियों के दृढ़ संकल्प और आपसी भाईचारे से ही आतंकवाद की जड़ें कमजोर होंगी। यह समय नफरत नहीं, बल्कि एकता दिखाने का है। हम सबको समझना होगा कि आतंकवाद किसी एक समुदाय या मजहब का नहीं, बल्कि पूरी मानवता का दुश्मन है। जब तक हम सब मिलकर इसके खिलाफ नहीं खड़े होंगे, तब तक यह चुनौती बनी रहेगी।"

इमाम बुखारी का यह वक्तव्य न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक रूप से भी बड़ा संदेश देता है। एक ओर उन्होंने पीड़ित परिवारों को सांत्वना दी, वहीं दूसरी ओर पूरे देश को एकता, विवेक और धैर्य का पाठ पढ़ाया। विशेषज्ञों के अनुसार, ऐसे समय में जब देश की भावनाएं उफान पर हैं, यह संतुलित और संवेदनशील बयान समाज में शांति और सौहार्द बनाए रखने में एक अहम भूमिका निभा सकता है।

10 लाख की रिश्वत लेते रंगेहाथ पकड़ा गया एमसीडी इंजीनियर, सीबीआई ने की बड़ी कार्रवाई

(जीएनएस)। नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में भ्रष्टाचार के खिलाफ सीबीआई की सघन मुहिम के दौरान एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के नजफगढ़ जोन में तैनात एक कनिष्ठ अभियंता को दस लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगेहाथ गिरफ्तार किया है। यह गिरफ्तारी उस समय हुई जब आरोपी एक ठेकेदार से बकाया बिल पास कराने के एवज में घूस की रकम ले रहा था। सीबीआई के सूत्रों के अनुसार, यह मामला 11 नवंबर को दर्ज हुआ था। शिकायत में आरोप लगाया गया था कि नजफगढ़ जोन के कार्यपालक अभियंता आर.सी. शर्मा, सहायक अभियंता नवीन कौल और कनिष्ठ अभियंता अजय बब्बरवाल ने एक ठेकेदार से उसके करीब तीन करोड़ रुपये के लंबित बिलों को पास कराने के लिए 25 लाख 42 हजार रुपये की मांग की थी। एजेंसी ने शिकायत की सत्यता की जांच की और उसके बाद जाल बिछाकर अभियंता को रंगेहाथ पकड़ने की योजना बनाई।

जांच एजेंसी के अधिकारियों ने बताया कि सोमवार शाम को आरोपी अजय बब्बरवाल पहली किश्त के रूप में 10 लाख रुपये की रिश्वत ले रहा था, तभी सीबीआई की टीम ने उसे रंगेहाथ पकड़ लिया। मौके पर हुई इस कार्रवाई ने एमसीडी के इंजीनियरिंग सर्कल में हड़कंप मचा दिया। गिरफ्तारी के तुरंत बाद एजेंसी ने आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी।

इसके बाद सीबीआई की टीम ने तीनों अभियंताओं के आवासों और कार्यालयों पर एक साथ छापेमारी की। इस दौरान अधिकारियों को भारी मात्रा में नकदी, सोने के आभूषण, अचल संपत्तियों से जुड़े दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस बरामद हुए हैं। बरामद दस्तावेजों की जांच से यह संकेत मिल रहा है कि रिश्वतखोरी का यह मामला एक बड़े नेटवर्क से जुड़ा हो सकता है, जिसमें एमसीडी के कई ठेके और भुगतान प्रभावित हुए हैं।

सीबीआई अधिकारियों का कहना है कि इस मामले में न केवल अभियंता अजय बब्बरवाल, बल्कि अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी जांच के दायरे में हैं। एजेंसी अब यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि ठेकेदारों से इस तरह की अवैध वसूली कितने समय से चल रही थी और क्या इसके पीछे किसी राजनीतिक संरक्षण का हाथ था। इस कार्रवाई ने एक बार फिर दिल्ली नगर निगम में फैले भ्रष्टाचार के गहरे जाल को उजागर कर दिया है। लंबे समय से ठेकेदारों द्वारा शिकायतें की जा रही थीं कि भुगतान और मंजूरी के लिए अभियंता और अधिकारी उनसे भारी कमीशन मांगते हैं। अब सीबीआई की इस छापेमारी ने उन आरोपों को ठोस सबूतों के साथ सामने ला दिया है।

एजेंसी ने बताया कि आरोपी अभियंता को अदालत में पेश किया जाएगा और आगे की जांच में अन्य संबंधित अधिकारियों की भूमिका भी स्पष्ट की जाएगी। सीबीआई ने इस बात पर जोर दिया कि वह सरकारी विभागों में पारदर्शिता और जवाबदेही स्थापित करने के लिए ऐसे अभियानों को और तेज़ करेगी ताकि रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार पर सख्त रोक लगाई जा सके।

संपादकीय

सजग मजबूत तंत्र विफल करेगा आतंकी मंसूबे

सुरक्षा की दृष्टि से चाकचौबंद मानी जाने वाली देश की राजधानी में लाल किले के पास हुए भीषण धमाके ने कई ज्वलंत सवालों को जन्म दिया है। सुरक्षा व्यवस्था के छिद्रों को पाटने की जरूरत के साथ चेताया है कि हमारी जरा सी चूक से आतंकवादियों को फिर से पांव जमाने का मौका मिल सकता है। अब जब मामले की जांच देश की शीर्ष खुफिया एजेंसियां कर रही हैं तो जांच के निष्कर्ष ही हकीकत बताएंगे। लेकिन धमाके का स्तर और उससे हुई जनधन की हानि चिंता बढ़ाने वाली है। निश्चित ही यह घटना एक बड़ी साजिश की ओर इशारा करती है। सवाल यह भी उठता है कि चाक-चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के बीच अपराधी कैसे इतनी बड़ी मात्रा में ज्वलनशील पदार्थ संवेदनशील इलाके में ले जाने में सफल हुए। प्रारंभिक सूचनाओं के अनुसार जम्मू-कश्मीर के रास्ते उत्तर प्रदेश व हरियाणा तक फैले कश्मीरी डॉक्टरों के एक समूह ने घटना को अंजाम दिया। इस घटनाक्रम ने पूरे देश को चौंकाया कि समाज में दूसरे भगवान का दर्जा पाने वाले डॉक्टर कैसे लोगों के चिथड़े उड़ाने वाले कृत्य को अंजाम दे सकते हैं? उनकी उस शपथ का क्या हुआ जो डॉक्टर पढ़ाई पूरी करने के बाद लोगों की जीवन रक्षा के लिए लेते हैं? अब तक यह मान्यता रही है कि आतंकवादी संगठनों से वे लोग ही जुड़ते हैं, जो कम पढ़े-लिखे होते हैं और विध्वंसकारी ताकतों के बहकावे में आकर आतंकवाद की राह में उतर जाते हैं। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से इस आतंक के स्लीपर सैल में डॉक्टरों के समूह का शामिल होना बेहद चिंता का विषय है। जो समाज के उस विश्वास को तोड़ता है कि डॉक्टर हमेशा जीवन देने वाला ही होता है। भविष्य में यह खतरनाक प्रवृत्ति अन्य व्हाइट क़ॉलर जॉब करने वाले समूह को भी घातक रास्ते पर ले जा सकती है। ऐसे में हमें लाल किले के निकट घटी घटना को गंभीरता से लेना चाहिए और आसन्न खतरे को महसूस भी करना चाहिए। बहरहाल, लाल किले के निकट की घटना एक आतंकी साजिश थी या बड़ी साजिश को अंजाम देने निकले अपराधियों की चूक से समय से पहले घटी घटना, ये एनआईए की जांच से ही पता चल सकेगा। लेकिन जो क्षति घटनास्थल पर हुई है वह किसी आतंकी घटना से कम तो नहीं है। बहरहाल, राष्ट्रीय राजधानी में हुई घटना के चलते भविष्य के खतरे के मद्देनजर सभी दृष्टिकोणों से मामले की जांच की जानी चाहिए। शायद इसी कारण से दिल्ली पुलिस ने यूएपीए, विस्फोटक अधिनियम व अन्य कठोर धाराओं में मामला दर्ज करके जांच का दायरा बढ़ाया गया है। लेकिन इस घटनाक्रम के बाद सुरक्षा एजेंसियों की सतर्कता के प्रश्न भी हमारे सामने हैं कि कैसे अपराधी इतनी भारी मात्रा में विस्फोटक पदार्थ राजधानी में ले जाने में सफल हुए। जिसके चलते भविष्य में ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति रोकने के लिये सभी जरूरी कदम उठाए जाने चाहिए। याद रहे कि अतीत में भी कई बार दिल्ली को आतंक से दहलाने की कोशिशें हुई हैं। हमें उन घटनाओं से भी सबक लेने की जरूरत है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आतंकवाद के मामले में जरा सी चूक भी व्यापक क्षति का सबब बन सकती है। देश को अस्थिर करने की किसी भी साजिश को विफल बनाने और आम लोगों का जीवन सुरक्षित बनाने के लिये सख्त कदम उठाने की जरूरत है। इस नये टेरर मॉड्यूल के मद्देनजर भी निगरानी का दायरा बढ़ाने की जरूरत है। पता लगाने की जरूरत है कि कैसे अपराधी इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक पदार्थ वाया फरीदाबाद दिल्ली पहुंचाने में सक्षम बने। वैसे हाल के वर्षों में देश के भीतर आतंकी घटनाओं पर लगभग विराम लगा हुआ था, लेकिन हालिया घटना ने हमारी चिंताओं को बढ़ाया ही है। हमें आतंकवाद को बढ़ावा देने के हर प्रयास को सख्ती से कुचलने की जरूरत है। सजग और सतर्क खुफिया तंत्र इसमें निर्णायक भूमिका निभा सकता है। सरकार की कोशिश होनी चाहिए कि जांच के बाद दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो। साथ ही इस बात पर विचार करने की जरूरत है कि इस कांड में सीमा पार सक्रिय आतंकी संगठनों की भूमिका तो नहीं है। बिना बाहरी मदद के इतनी बड़ी साजिश को अंजाम देना सहज नहीं हो सकता। व्हाइट कॉलर आतंकी मॉड्यूल का पनपना हमारी गहरी चिंता का विषय भी होना चाहिए।

हाईवे के किनारे खड़ी गाड़ियों पर सुप्रीम टिप्पणी

> "आमतौर पर किसी भी बड़े हादसे में शिकार हुए यात्रियों की संख्या का ही जिक्र होता है और सरकार मुआवजे की घोषणा करके अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेती है। अधिक से अधिक हमारे विमर्श का मुद्दा यह होता है कि दोषी कौन था? कौन सा ड्राइवर लापरवाही से वाहन चला रहा था, वह नशे में था या उसे नींद की झपकी लग गई।

देश भर में नेशनल हाईवे व शहर के अंदर व आउटर में संचालित होटलों, ढाबों के किनारे भारी वाहन चालकों द्वारा यातायात नियमों की अनदेखी करते हुए रोड पर जहां-तहां वाहनों को खड़ा कर दिया जाता है। सड़क किनारे खड़े ऐसे वाहन अन्य वाहन चालकों और यात्रियों के लिए यमदूत साबित हो रहे हैं। बीती 10 नवंबर को सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान के फालौदी और तेलंगाना के श्रीकाकुलम के सड़क हादसों में 37 लोगों की मौत पर सुओ मोटो कार्रवाई करते हुए सड़क सुरक्षा की गंभीर खामियों पर चिंता जताई है।

सुप्रीम कोर्ट ने इस दौरान हाईवे के किनारे अवैध ढाबों पर भी चिंता जताई। कहा कि इन ढाबों पर आने वालों की गाड़ियां हाईवे पर खड़ी रहती हैं, जिनसे हादसे होते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण यानी एनएचएआई और सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय से सड़क किनारे मौजूद ढाबों और सड़क मेंटेनेंस की स्थिति पर रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया। जस्टिस जे.के. महेश्वरी और जस्टिस विजय विश्नोई की बेंच ने कहा कि दो सप्ताह के भीतर एक सर्वे कराया जाए, जिससे यह पता चल सके कि कितने ढाबे राजमार्गों के किनारे ऐसे क्षेत्रों में बनाए गए हैं जो इस तरह की सुविधाओं के लिए अधिसूचित नहीं है यानी अवैध ढाबों के बारे में जानकारी देने को कहा गया है। यातायात के नियमों के मुताबिक, हाईवे के किनारे सड़क पर ट्रक व अन्य वाहन खड़े नहीं किए जा सकते हैं।

शीर्ष न्यायालय की टिप्पणी के आलोक में बात की जाए तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि विकास के नाम पर हमने सरपट वाहन दौड़ने वाली सड़कें तो बना दी, लेकिन यह सुनिश्चित नहीं किया कि यात्रा दुर्घटनाओं से निरापद कैसे रहे। यह हृदय विदारक होता है कि सड़कों के निर्माण में तकनीकी

खामियों, ट्रकों की अराजकता तथा राजमार्ग के अवरोधों के चलते परिवार के परिवार असमय काल कवलित हो जाते हैं। जिम्मेदार विभाग और सरकार की चतुराई यह होती है कि वह समस्या के मूल में जाने की बजाय जांच और फौरी कार्रवाई में लग जाता है। इन हादसों की जवाबदेही तय नहीं की जाती। हर हादसे के बाद पुरानी तंत्र पुरानी स्क्रिप्ट को दोहराता है।

आमतौर पर किसी भी बड़े हादसे में शिकार हुए यात्रियों की संख्या का ही जिक्र होता है और सरकार मुआवजे की घोषणा करके अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेती है। अधिक से अधिक हमारे विमर्श का मुद्दा यह होता है कि दोषी कौन था? कौन सा ड्राइवर लापरवाही से वाहन चला रहा था, वह नशे में था या उसे नींद की झपकी लग गई। या फिर वाहन में तकनीकी खामी की वजह से हादसा हुआ। लेकिन वास्तव में हम उन तकनीकी व वास्तविक खामियों को नजरअंदाज कर देते हैं जो दुर्घटना का कारण बनती हैं।

एक ओर जहां सड़क निर्माण में ठेकेदार द्वारा की गई चूक होती हैं, वहीं सड़कों के किनारे बेतरतीब बने ढाबे भी होते हैं, जहां अकसर ट्रक चालक अपने वाहन गलत ढंग से खड़े कर देते हैं। लेकिन हर हादसे में कहीं न कहीं ऐसे कारण जरूर होते हैं, जो दुर्घटना की तात्कालिक वजह बनते हैं। लेकिन अक्सर हम उन्हें नजरअंदाज कर देते हैं। ऐसे महत्वपूर्ण कारक को अनदेखा करने की वजह से भविष्य में ऐसी ही दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति होने की आशंका बलवती होती है। भारत में सड़क हादसे एक गंभीर चिंता का विषय हैं, जहां हर साल बड़ी संख्या में लोगों की जान जाती है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 4,80,583 से अधिक दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 1,72,890 से अधिक मौतें हुईं और 4,62,825 लोग घायल हुए। देश में प्रतिदिन लगभग 1,316 हादसे और 474 मौतें होती हैं, यानी हर घंटे लगभग 20 जानें जाती हैं। दुनिया के केवल 1 प्रतिशत वाहन भारत में हैं, लेकिन सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली वैश्विक मौतों का 11 प्रतिशत हिस्सा यहीं है।

यह विडंबना ही है कि राष्ट्रीय राजमार्गों पर जगह-जगह टोल संग्रह केंद्रों के जरिये टैक्स तो खूब वसूले जाते हैं, लेकिन राजमार्गों को दुर्घटनाओं से निरापद बनाने के लिये गंभीर प्रयास नहीं होते। कुकुरमुत्तों की तरह सड़कों का अतिक्रमण करते ढाबों पर लगाम नहीं लगाई जाती। गंभीरता से पड़ताल नहीं होती है कि क्या सड़क निर्माण में ठेकेदार ने सभी तकनीकी मानकों का पालन किया है?

सबसे ज्यादा बड़े वाहन ढाबों पर खड़े नजर आते हैं। रात व दिन में यहां वाहन एक के पीछे एक खड़े रहते हैं। रात के समय तो आलम और भी भयंकर होता है, यहां से निकलने में भी डर बना रहता है। नियमित चेकिंग न होने और चालान न होने की वजह से यहां हादसे का डर बना रहता है। छुटपुट मामले तो आये दिन होते रहते हैं।बरसात के मौसम में इन ढाबों के पास हादसे की अधिक आशंका रहती है। ट्रक मिट्टी में खड़े होकर हाईवे पर आते हैं तो मिट्टी सड़क पर जमा हो जाती है। बरसात में इस मिट्टी से फिसलकर बाइक सवार हादसे का शिकार हो जाते हैं। इस के अलावा कई बार ट्रकों या अन्य लोडिंग वाहनों में उनकी क्षमता से अधिक माल भरा होता है। मुख्यता लोहे के सरिये, गर्डर आदि जो लोडिंग की लंबाई में न आते हुए पीछे तक निकले रहते हैं। इस तरह के वाहन भी हादसों का कारण बनते हैं।

यातायात पुलिस और परिवहन विभाग की ओर से लाखों रुपये रुपये प्रचार-प्रसार पर बहाया जाता है। इसके बावजूद सड़क सुरक्षा के नियम निर्देश कहीं भी धरातल पर देखने को नहीं मिलते हैं। गोष्ठियों और सेमिनारों में तो वाहन चालकों को नियमों का पाठ पढ़ाया जा जाता है लेकिन हाईवे ट्रक, डीसीएम, कंटेनर या अन्य वाहन चालकों को समझाने वाला कोई नहीं है। देश में सैकड़ों लोगों की मौत सड़क के किनारे गलत तरीके से खड़े ट्रक से वाहनों के टकराने से होती है, लेकिन दोषी ट्रक चालक को कड़ी सजा नहीं मिलती। वहीं दूसरी ओर वाहन चालकों को भी गति सीमा में रहने तथा अन्य सावधानियों का सख्ती से पालन करना चाहिए। सरकारों का दायित्व भी बनता है कि राजमार्गों पर रफ्तार की सीमा के नियमन के साथ बाधामुक्त सफर भी सुनिश्चित करें।

निश्चित रूप से राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण और सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की जवाबदेही बनती है कि राजमार्गों को दुर्घटना मुक्त बनाने के लिये नियमित जांच-पड़ताल की जाती रहे। ताकि निर्दोष लोगों के बेमौत मरने का सिलसिला खत्म हो सके। इन विभागों व मंत्रालयों का जिम्मा सिर्फ टोल वसूलना ही नहीं है बल्कि सड़कों को सुरक्षित बनाना भी इनकी जवाबदेही है। निश्चित रूप से सड़क के निर्माण की गुणवत्ता तथा उसे दुर्घटना मुक्त बनाने के लिये उच्च सुरक्षा मानकों का क्रियान्वयन भी उतना जरूरी है। इसके अलावा सख्त कानून व निगरानी के जरिये ट्रकों व भारी वाहनों को सड़क के किनारे खड़े करने पर रोक लगायी जाए। भारत में हर साल हजारों सड़क हादसे होते हैं. ज्यादातर में लापरवाही जिम्मेदार होती है। सुप्रीम कोर्ट का ये कदम सरकार और अधिकारियों पर दबाव डालेगा। इससे हाईवे सुरक्षित होंगे, ढाबे नियंत्रित जगह पर चलेंगे और ट्रक पार्किंग के लिए अलग जगह बनेगी। आम जनता की जान बचाने के लिए ये बड़ा फैसला साबित हो सकता है।

प्रेरणा

विजेता का आत्मसाक्षात्कार

इतिहास के पन्नों में जिस नाम का जिक्र विजय, साम्राज्य और शक्ति के प्रतीक के रूप में होता है, वह नाम है—सिकंदर। मकदूनिया का यह युवा सम्राट संसार पर अधिकार करने की आकांक्षा लिए महाद्वीपों को पार करता चला गया। उसकी सेना का कदम जिस भूमि पर पड़ा, वहां पराजय की छाया फैल गई। उसके आगे बड़े-बड़े राजवंश झुक गए। लेकिन हर विजय के साथ उसकी महत्वाकांक्षा और भी बढ़ती चली गई। वह सोचता था कि यदि पूरी पृथ्वी उसके अधीन आ जाए, तभी वह सच्चा विजेता कहलाएगा। किंतु एक दिन भाग्य ने उसे एक ऐसा अनुभव दिया जिसने उसके समूचे जीवन का अर्थ बदल दिया।

वह समय था जब सिकंदर एक छोटे से नगर को चारों ओर से घेर चुका था। नगर की सीमाएं बंद थीं, अंदर के लोग भयभीत थे। सेनाएँ डेरा डाले बैठी थीं, अगला प्रातःकाल निर्णायक युद्ध का संकेत दे रहा था। परंतु रात के गहराते सन्नाटे में जब सिकंदर अपने शाही तंबू से बाहर निकला, तो उसके भीतर एक अजीब बेचैनी थी। पूरे दिन के युद्ध-योजनाओं और विजय की चर्चा के बावजूद उसके पेट में खालीपन था और मन में एक अनजानी थकान। उसने सोचा कुछ देर अकेले टहलता हूँ और भोजन की तलाश भी कर लूं। वह साधारण सैनिक वेश में नगर की ओर बढ़ गया।

रास्ते सूने थे, दीप बुझ चुके थे। कुछ ही दूर पर एक मिट्टी का छोटा सा मकान दिखा। सिकंदर ने धीरे से दरवाजा खटखटाया। अंदर से किसी वृद्धा की आवाज़ आई, "कौन है?" उसने उत्तर दिया, "एक यात्री हूँ, भूखा हूँ, क्या कुछ खाने को मिलेगा?" दरवाजा खुला। सामने खड़ी थी एक दुबली-पतली बूढ़ी औरत, जिसके चेहरे पर गरीबी की रेखाएं तो थीं, पर आंखों में असाधारण निडरता। उसने उस सैनिक वेशधारी व्यक्ति को ध्यान से देखा और तुरंत समझ गई कि यह कोई साधारण मनुष्य नहीं, स्वयं सिकंदर महान है।

फिर भी उसने न भय दिखाया, न चापलूसी। उसने बड़े शांत स्वर में कहा, "आओ बेटा, थके लगते हो, बैठो। अभी कुछ लाती हूँ।" वह भीतर गई और थोड़ी देर में एक थाली लेकर लौटी, जिस पर कपड़ा ढका था। सिकंदर को लगा कि अब गर्म रोटियां और सादा भोजन मिलेगा, जिससे उसकी भूख शांत होगी। उसने कपड़ा हटाया—पर जैसे ही देखा, वह अचंभित रह गया। थाली में रोटियों के स्थान पर सोने-चांदी के आभूषण रखे थे।

सिकंदर ने विस्मय से पूछा, "मां, यह क्या है? मैंने तो रोटियां मांगी थीं, यह सोना-चांदी क्यों दिया?" बुढ़िया ने बड़ी सहजता से कहा, "बेटा, मुझे लगा तुम्हारी भूख रोटियों की नहीं, सोने-चांदी की है। अगर रोटियों की भूख होती, तो तुम अपने घर-देश को छोड़कर दूसरों की भूमि पर क्यों आते? जो व्यक्ति भूख के लिए युद्ध करता है, वह भोजन मांगता है; पर जो लालच के लिए युद्ध करता है, वह धन और राजपाट चाहता है। इसलिए मैंने वही दिया जिसकी तुम्हें भूख होगी।"

उस वृद्धा के शब्द जैसे तीर बनकर सिकंदर के अहंकार को भेद गए। उसकी आंखें नीचे झुक गईं। उसने पहली बार किसी साधारण स्त्री से ऐसा सत्य सुना था जिसने उसके भीतर छिपे झूठे गौरव को उघाड़ दिया। वह धीरे-धीरे घुटनों पर बैठ गया, उसके होंठ कांपे—"मां, तूने आज मुझे पहचान से परिचय कराया है। मैं सोचता था मैं संसार का विजेता हूं, पर वास्तव में मैं अपने लालच और अहंकार का दास हूं। आज मैं अपनी सबसे बड़ी हार स्वीकार करता हूं।"

बुढ़िया ने प्रेम से उसका सिर सहलाया और कहा, "बेटा, सच्चा विजेता वही है जो दूसरों को नहीं, अपने मन को जीत लेता है। तलवार से जीते हुए राज्य कभी स्थायी नहीं होते, पर आत्मा से जीता हुआ क्षण अमर बन जाता है। धन से भूख नहीं मिटती, सत्य से तृप्ति मिलती है।"

सिकंदर की आंखों से आंसू बह निकले। उसे लगा मानो वर्षों से जो बोझ उसके हृदय पर था, वह उतर गया हो। उस रात उसने उस बुढ़िया के घर का सादा भोजन ग्रहण किया — कुछ रोटियां, थोड़ा नमक और पानी। पर वही भोजन उसे जीवन का सबसे स्वादिष्ट लगा, क्योंकि उसमें अहंकार की जगह नम्रता थी और हिंसा की जगह करुणा।

अगले दिन जब सिकंदर अपने शिविर लौटा, तो उसकी आंखों में एक नई चमक थी। उसने अपनी सेना को बुलाकर कहा, "हम इस नगर पर आक्रमण नहीं करेंगे।" सैनिक हैरान थे — "महाराज, यह कैसे संभव है? हम जीत के इतने करीब हैं!" सिकंदर ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "नहीं, इस नगर में ऐसी आत्माएं बसती हैं जिन्हें तलवार से नहीं, सम्मान से जीता जा सकता है। यह नगर पहले ही मुझे जीत चुका है।"

उसके बाद उसने युद्ध का विचार त्याग दिया और अपने अभियान से पीछे हट गया। कहा जाता है कि उस दिन से सिकंदर के भीतर परिवर्तन आ गया। उसकी दृष्टि बदल गई; वह अब केवल राजाओं को हराने नहीं, बल्कि जीवन को समझने लगा। उसे अहसास हुआ कि जिसने अपनी वासनाओं, अपने क्रोध और अपने लोभ को जीत लिया, वही सच्चे अर्थों में विश्वविजेता है।

समय बीतता गया, साम्राज्य ढह गए, राजसिंहासन मिट्टी में मिल गए, लेकिन वह बुढ़िया और उसके शब्द इतिहास के पत्थरों पर खुद गए। यह कथा आज भी मानवता को सिखाती है कि शक्ति, धन और विजय से बढ़कर है आत्मज्ञान। सच्चा विजेता वह नहीं जो दुनिया पर अधिकार करे, बल्कि वह है जो अपने भीतर के अंधकार को जीत ले।

सिकंदर उस दिन समझ गया था कि संसार को जीतने से पहले स्वयं को जीतना ही जीवन की सबसे बड़ी विजय है — और वही है मनुष्य का सच्चा आत्मसाक्षात्कार।

सबको लड़नी होगी आतंक के खिलाफ लड़ाई

जम्मू-कश्मीर को छोड़कर शेष देश पिछले लगभग एक दशक से आतंकी हमलों से करीब-करीब मुक्त था, लेकिन दिल्ली में लाल किले के निकट कार में हुए विस्फोट ने फिर से पुराने दौर की याद दिला दी, जब कुछ अंतराल पर एकल या श्रृंखलाबद्ध धमाकों से देश दहल जाता था। शेष देश में लंबे समय तक कोई बड़ी आतंकी घटना न घटने से आम लोग निश्चिंत थे कि अब आतंकी हमले नहीं कर सकेंगे, लेकिन पिछले कुछ समय से कश्मीर घाटी से लेकर उत्तर प्रदेश के सहारनपुर, हरियाणा के फरीदाबाद, गुजरात और दिल्ली तक बरामद विनाशकारी सामग्री तथा गिरफ्तार संदिग्ध आतंकवादियों के कारण उनकी चिंता फिर बढ़ गई है।

इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि पिछले कुछ समय से देश के कई हिस्सों से किसी न किसी आतंकी माड्यूल के पकड़े जाने की खबर आ रही है। पिछले दिनों ही गुजरात में हैदराबाद के एक डाक्टर को घातक रसायन बनाने की सामग्री और हथियारों के साथ पकड़ा गया। उसके दो साथी भी गिरफ्तार किए गए, जो उत्तर प्रदेश के हैं।

इस साल अप्रैल में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों ने जब धर्म पूछ कर 26 लोगों की हत्या की थी तो भारत ने इसके जवाब में आपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान स्थित जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकी समूहों के मुख्य अड्डों को ध्वस्त कर सीमा पार आतंकवाद पर अब तक का सबसे बड़ा आघात किया था। निश्चय ही उसी के बाद से वे बड़े प्रतिशोध का षड्यंत्र रच रहे होंगे। लाल किला विस्फोट के तरीके और अब तक सामने आए षड्यंत्र की कहानी में छह वर्ष पहले पुलवामा हमले की जिहादी आतंक की कड़ी दिखती है। यद्यपि छानबीन के बाद ही पूरी सच्चाई सामने आएगी, बावजूद इसके पीछे की घटनाएं एक-दूसरे से जुड़ी लगती हैं। श्रीनगर में जैश-ए-मोहम्मद के समर्थन में पोस्टर लगने के बाद पुलिस ने आतंकवादियों के कुछ हमदर्द और पत्थरबाज गिरफ्तार किए। उनसे एक मौलवी का पता चला, जो संदिग्ध गतिविधियों में लिप्त था। उससे पूछताछ के बाद अनंतनाग के रहने वाले डा. आदिल को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से गिरफ्तार किया गया। पुलिस जब उसे लेकर श्रीनगर पहुंची और पूछताछ की तो अनंतनाग के सरकारी अस्पताल से उसके ठिकाने से असाल्ट राइफल मिली। पुलिस ने और पूछताछ की तो पुलवामा जिले के डा. मुजम्मिल का पता चला।

इससे मिली जानकारी के आधार पर पुलिस ने जब फरीदाबाद के धौज स्थित अल फलाह मेडिकल कालेज में कार्रवाई की तो उसे 360 किलोग्राम विस्फोटक, एक एके-47 राइफल और 84 कारतूस सहित टाइमर, जिलेटिन के छड़ और अन्य सामग्रियां मिलीं। उसके बाद जांच की कड़ियां पुलिस को फरीदाबाद के फतेहपुर तगा गांव तक ले गईं, जहां एक घर में विस्फोटक के ढेर देखकर उसके होश उड़ गए। धौज से फतेहपुर तगा गांव चार किलोमीटर दूर है। डा. मुजम्मिल ने मौलाना इश्तियाक से यह घर किराए पर ले रखा था। करीब 3000 किलो अमोनियम नाइट्रेट विस्फोटक बरामद होना सबसे बड़ी बरामदगियों में से एक है।

अभी तक इस प्रकरण में गिरफ्तार लोग उच्च शिक्षा प्राप्त और संपन्न परिवार के हैं। डा. मुजम्मिल फिजिशियन है और फरीदाबाद के अल फलाह मेडिकल कालेज में पढ़ाता था और गिरफ्तार किए गए शोपियां के मौलवी इरफान अहमद, श्रीनगर के मकसूद अहमद डार, आरिफ निसार डार और यासिर उल अशरफ, गांदरबल के जमीर अहमद अहंगर में से कोई निर्धन, बेरोजगार या अनपढ़ नहीं है।

लाल किला विस्फोट में मारा गया डा. उमर नबी एमडी मेडिसिन डिग्री के साथ फरीदाबाद के अल फलाह मेडिकल कालेज में डाक्टर था। डा. आदिल उसका साथी है। इनकी एक साथी डा. शाहीन लखनऊ की है। उसकी कार से एक राइफल मिली थी। फरीदाबाद माड्यूल में कुछ और डाक्टर शामिल पाए जा सकते हैं। जांच से ही पता चलेगा कि इन्होंने क्यों आतंकवादी माड्यूल बनाया? किस तरह इतना विस्फोटक, हथियार इकट्ठे किए, कौन-कौन इसके पीछे थे और कहां-कहां विस्फोट करने की साजिश थी?

पिछले तीन दशकों की जिहादी घटनाओं के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष यही निकलता है कि आतंकियों को लाल किला विस्फोट की प्रेरणा अपने कट्टर मजहबी सोच से मिली। इसी कारण यह जानते हुए कि विस्फोट में वे स्वयं भी मारे जाएंगे या पकड़े गए तो उन्हें मृत्युदंड मिलेगा, उन्होंने सब कुछ किया। इस सच को स्वीकार करना पड़ेगा कि सुरक्षा बलों की कार्रवाइयों से हम कुछ समय के लिए उन्हें कमजोर कर सकते हैं, पर दुनिया का इस्लामीकरण करने, काफिरों को सबक सिखाने के घातक मजहबी सोच को समाप्त करना आसान काम नहीं है।

फरीदाबाद में एक व्यक्ति किराए पर घर लेकर भारी मात्रा में विस्फोटक लाता रहा, लेकिन मकान मालिक या किसी अन्य ने उसे रोकने-टोकने या पुलिस को खबर करने की कोशिश नहीं की। संभव है इन आतंकियों को स्थानीय लोगों का सहयोग मिला हो। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि भारत सहित विश्व में जितनी आतंकवादी घटनाएं हुई हैं, ज्यादातर में स्थानीय लोगों का सहयोग रहा है। जब पाकिस्तान के जिहादी जनरल आसिम मुनीर कहते हैं कि मुसलमान हिंदुओं के साथ नहीं रह सकते और मदीना के बाद कलमे की बुनियाद पर बनने वाली दूसरी रियासत पाकिस्तान है तथा कश्मीर हमारे गले की नस है तो यह समझना चाहिए कि आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष कितना कठिन है।

पाकिस्तान को अमेरिका और तुर्किये जैसे देशों का मिलता सहयोग आतंकवादियों के लिए प्रोत्साहन और समर्थन साबित हुआ है। सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े एक-एक व्यक्ति के साथ भारत के सभी नागरिकों को हर क्षण जागरूक और सक्रिय रहने की आवश्यकता है। पता नहीं कौन हमारे आसपास जिहादी मानसिकता से लैस होकर भयानक हिंसा का षड्यंत्र रच रहा हो। एक राष्ट्र के नाते भारत का संकल्प आतंकवाद का समूल नाश करना है।

अभियान

कामदेव पर विजय के बाद 'मैं' के भाव में डूबे मुनि को कैसे मिला श्राप

सृष्टि के प्रारंभ से ही नारद मुनि को ब्रह्मांड का सबसे ज्ञानवान, तेजस्वी और भक्तिमय ऋषि माना गया है। वे ब्रह्मा के मानसपुत्र हैं, जिन्होंने लोक-कल्याण के लिए स्वयं को समर्पित किया। वे तीनों लोकों में भ्रमण करते हुए हर प्राणी के कल्याण की चिंता करते थे। उनकी वीणा से जब "नारायण-नारायण" की ध्वनि निकलती थी, तो देवता, दानव, मनुष्य—सभी को ईश्वर की याद आ जाती थी। परंतु यह भी सत्य है कि कभी-कभी महान आत्माएँ भी सूक्ष्म रूप से अहंकार के जाल में फँस जाती हैं। यही हुआ एक बार देवर्षि नारद के साथ, जब उन्होंने अपने जीवन की सबसे कठिन परीक्षा में कामदेव को हराया — पर स्वयं को नहीं।

एक बार देवर्षि नारद घने वन में तपस्या में लीन थे। वर्षों से वे भोजन, नींद और सांसारिक मोह से परे, केवल ध्यान में मग्न थे। उनकी तप की अग्नि से दिशाएँ प्रज्वलित हो रही थीं। तभी देवताओं के शत्रु असुरों के भय से विचलित इंद्र ने अपने दूत कामदेव को आदेश दिया कि वह नारद की तपस्या भंग कर दे। क्योंकि जब कोई मनुष्य या देवता अत्यधिक तप करता है, तो उसकी शक्ति बढ़ जाती है, और देवताओं का सिंहासन हिलने लगता है। कामदेव अपने समस्त शस्त्रों के साथ वहाँ पहुँचा। वसंत ऋतु का सौंदर्य उसने अपने चारों ओर फैला दिया, आकाश में कोयल का कलरव गूंज उठा, मंद पवन फूलों की सुगंध लेकर चलने लगा। अप्सराएँ नृत्य करने लगीं, और वातावरण काममय हो गया। पर नारद का मन स्थिर था — जैसे कोई पर्वत झंझावात में भी अचल खड़ा हो। उन्होंने अपनी चेतना को "नारायण" में इस प्रकार विलीन कर दिया था कि कोई सांसारिक शक्ति उन्हें विचलित नहीं कर सकी।

कामदेव ने अपने पुष्प बाण एक-एक करके चलाए, किंतु वे मुनि के तेज के आगे जलकर भस्म हो गए। पराजित होकर कामदेव देवसभा में पहुँचा और देवराज इंद्र को सब बताया। इंद्र सहित सभी देवता विस्मित रह गए। सबने कहा — "ऐसा तप, ऐसा ब्रह्मचर्य, ऐसा संयम किसी ने नहीं देखा।" तुलसीदास जी ने भी इस घटना का वर्णन किया —

"मुनि सुसीलता आपनि करनी।
सुरपति सभाँ जाइ सब बरनी।।
सुनि सब कें मन अचरजु आवा।
मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा।।"

अर्थात कामदेव ने देवसभा में जाकर नारद की तपशक्ति की स्तुति की, पर सब देवताओं ने यह कहते हुए भगवान विष्णु को प्रणाम किया कि ऐसी विजय केवल उनकी कृपा से ही संभव है।

परंतु वहीं, जंगल में ध्यानमग्न नारद के मन में एक सूक्ष्म विचार उठा — "मैंने ऐसा अद्भुत कार्य किया है, जिसका साक्षी कोई नहीं। इस विजय की महिमा कौन जानेगा?" यह विचार धीरे-धीरे संतोष से गर्व में बदल गया। मन में भाव उठा — "जब भगवान शंकर ने कामदेव को जलाकर नष्ट किया था, तो सब लोकों ने उनकी महिमा गाई थी। अब जब मैंने कामदेव को बिना क्रोध, बिना हिंसा के केवल ध्यान से परास्त किया है, तो मुझे भी मान मिलना चाहिए।"

इस विचार के साथ ही नारद मुनि कैलास पर्वत की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने भगवान शंकर को प्रणाम किया और गर्वपूर्वक बोले — "महादेव, आज मैंने भी कामदेव को जीत लिया। वह मेरे सामने असहाय हो गया। मेरे ध्यान के तेज में उसके सारे बाण पिघल गए।" भगवान शंकर ने मुस्कुराकर कहा — "देवर्षि, यह तो बड़ी अद्भुत बात है।" पर उनके मन में विषाद की लहर दौड़ गई। वे सोचने लगे — "आज वही नारद, जिनकी वाणी में भक्ति का अमृत बहता था, अब अपने अहंकार का विष घोल रहे हैं। जब मैंने कालकूट विष पिया था, तब भी इतना कष्ट नहीं हुआ जितना इस गर्वपूर्ण कथा को सुनकर हो रहा है।"

शिवजी ने अपने संयम से कुछ नहीं कहा। वे जानते थे कि साधक को उसका अहंकार स्वयं ही शिक्षा देता है। उन्होंने बस इतना कहा — "देवर्षि, यह घटना दिव्य है, पर मैं निवेदन करता हूँ कि इसे भगवान विष्णु के समक्ष मत कहना। ऐसा करने से तुम्हारे भीतर जो सूक्ष्म अहंकार जन्मा है, वह बढ़ेगा। अहंकार साधना की जड़ को काट देता है।"

नारद मुनि ने बाहरी रूप से तो सिर हिलाकर सहमति जताई, पर उनके मन में यह विचार आया — "शंकरजी को ईर्ष्या हो रही है। उन्हें अच्छा नहीं लगा कि अब कोई और भी कामदेव का विजेता बन गया।" कुछ दिन बाद, जब नारद विष्णु लोक पहुँचे, तो वे उस सलाह को भूल गए। उन्होंने प्रसन्न होकर श्रीहरि को प्रणाम किया और बोले — "प्रभु, आपकी कृपा से मैंने कामदेव को जीत लिया!" विष्णु मुस्कराते रहे। उन्होंने कुछ नहीं कहा, बस मधुर स्वर में बोले — "देवर्षि, आपकी विजय तो असाधारण है। मुझे प्रसन्नता है कि आपने स्वयं को इतना स्थिर कर लिया।"

परंतु यही क्षण वह था जब नारद का पतन आरंभ हुआ। क्योंकि अब उनके भीतर "मैं" का भाव प्रबल हो चुका था। उन्होंने भक्ति को साधन नहीं, अपनी उपलब्धि मान लिया। और यही वह सूक्ष्म पाप था, जो किसी भी साधक को सर्वश्रेष्ठ से सामान्य बना देता है।

विष्णु भगवान जानते थे कि जब तक यह "मैंने किया" का भाव समाप्त नहीं होगा, तब तक नारद का उत्थान संभव नहीं। इसलिए उन्होंने माया का जाल रचा। कुछ समय बाद नारद एक दिव्य नगर में पहुँचे, जहाँ विश्वसुंदरी राजकुमारी की स्वयंवर था। नारद ने उसमें भाग लेने की इच्छा की, पर आगे चलकर उन्हें ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा कि स्वयं विष्णु ने उन्हें श्राप देने का अवसर दे दिया। यही वह प्रसंग था जब देवर्षि नारद को अहंकार का वास्तविक दंड मिला।

यह कथा केवल नारद की नहीं, प्रत्येक साधक की है। जब मनुष्य किसी उपलब्धि, ज्ञान, शक्ति या सफलता को अपनी क्षमता का परिणाम मान लेता है, तो वही क्षण उसका पतन बन जाता है। कामदेव का बाण इंद्रियों को हिला सकता है, पर अहंकार का बाण आत्मा को घायल कर देता है।

देवर्षि नारद की यह कथा हमें यही सिखाती है — असली विजय वह नहीं जो बाहर के शत्रु पर मिले, बल्कि वह है जो भीतर के 'मैं' पर मिले। क्योंकि जब तक मनुष्य अपने भीतर के अहंकार को नहीं जीतता, तब तक उसका हर यश अधूरा है। जो स्वयं को मिटा दे, वही सच्चे अर्थों में ईश्वर को पा लेता है। यही नारद के पतन और पुनर्जागरण का शाश्वत सत्य है — कि ईश्वर तक जाने का मार्ग "मैं" से "तू" की यात्रा से होकर गुजरता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

सतपुड़ा पर्वतमाला में स्थित याहामोगी माता देवमोगरा धाम के दर्शन करेंगे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, जानिए मंदिर का पौराणिक इतिहास

▸▸देवमोगरा धाम में विराजमान हैं आदिजाति समाज की कुलदेवी पांडोरी माता, यहाँ आयोजित होता है नर्मदा जिले का सबसे बड़ा मेला

▸▸प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 15 नवंबर को नर्मदा जिले में जनजातीय गौरव दिवस के राष्ट्रीय स्तर के समारोह में शामिल होंगे

(जीएनएस)। गांधीनगर, 13 नवंबर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से इस वर्ष गुजरात सहित देशभर में आदिजाति समाज के जननायक भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती भव्य रूप से मनाई जा रही है। आदिजाति समुदाय के पराक्रम, बलिदान एवं सांस्कृतिक विरासत को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रधानमंत्री ने 15 नवंबर को 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय किया था। इस वर्ष जनजातीय गौरव दिवस का राष्ट्रीय स्तर का उत्सव प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में गुजरात में नर्मदा जिले के डेडियापाडा में आयोजित होगा। नर्मदा जिले की यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री प्रसिद्ध याहामोगी देवमोगरा धाम में माताजी के दर्शन करेंगे। सतपुड़ा पर्वतमाला में प्राकृतिक सौंदर्य के बीच स्थित यह मनमोहक धाम आदिजाति समाज के लोगों की आस्था का केन्द्र है, जिसकी महिमा अनूठी है।

सतपुड़ा की पर्वतमाला के बीच स्थित पौराणिक मंदिर देवमोगरा धाम बाहर से नेपाल के पशुपतिनाथ जैसा दिखाई देता है

नर्मदा जिले की सागबारा तहसील के देवमोगरा में आदिजातियों की कुलदेवी पांडोरी माता (याहमोगी) का मंदिर स्थित है। सतपुड़ा की पर्वतमालाओं में प्रकृति की गोद में बसे इस धाम में स्वयंभू याहा पांडोरी देवमोगरा माता आदि-अनादि काल से स्वयं कणी-कंसरी के रूप में विराजमान हैं। यहाँ गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के आदिजाति समुदाय के लोग याहामोगी पांडोरी की कुलदेवी के रूप में अपार श्रद्धा-आस्था तथा भक्ति के साथ पूजा-अर्चना करते हैं। इस पवित्र हेला दाब की आदि-अनादि काल से बहुत अनूठी महिमा रही है। हजारों वर्ष पूर्व जब इस प्रदेश में भीषण अकाल पड़ा था, तब माताजी ने देवमोगरा धाम पर स्वयं वास किया था। भीषण अकाल के कारण अन्न-जल की किल्लत पैदा हुई और पशु-पक्षी तथा मानव; सभी दुःखी हो गए। ऐसे संकट की घड़ी में इस क्षेत्र के प्रजापालक गोर्या कोठार ने आवश्यक अन्न का वितरण करना शुरू किया, परंतु आगे चलकर गोर्या कोठार के अन्न भंडार भी खाली होने लगे। तब उनकी पालक पुत्री याहा पांडोरी ने कणी-कंसरी का रूप धारण कर अन्न वितरण का कार्य संभाला। तब से आज तक अनाज के भंडार कभी खाली नहीं हुए हैं। अर्थात् आदि-अनादि काल से लेकर आज तक माताजी के अन्न भंडार समग्र मानव जाति के लिए सदैव भरे रहे हैं। सागबारा तहसील के देवमोगरा गाँव में स्थित इस मंदिर में अनेक पीढ़ियों से लाखों भक्त माताजी के चरणों में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ अपनी समस्याओं तथा दुःखों का निवारण प्राप्त करने के लिए आते हैं। मंदिर के पुजारी द्वारा माताजी का आह्वान किया जाता है और आशीर्वाद देकर हर व्यक्ति के कल्याण की मंगलकामना की जाती है। माताजी के चरणों में जो भी दुःखी व्यक्ति रोता हुआ आता है, वह हँसता हुआ वापस लौटता है।

देवमोगरा धाम : आदिजाति समाज की आस्था, परंपरा तथा संस्कृति का जीवंत प्रतीक

आदिजाति समुदाय हजारों वर्षों से अपनी अनूठी परंपरा का पालन करता है, जिसमें वे संपूर्ण श्रद्धा के साथ नई फसल को बाँस की टोकरी में रखते हैं और सब्जी-भाजी, पूजा सामग्री की हिजारी (हिंगारी) बांधकर उसे सिर पर रखकर एवं रंगबिरंगी वस्त्र पहनकर तथा महिलाएँ सोने-चांदी के आभषणों से सज्ज होकर गाजे-बाजे के साथ होब यात्रा पर निकलते हैं। आदिवासी लोग सवा महीने का व्रत-उपवास कर याहा पांडोरी देवमोगरा के चरणों में धान-अन्न श्रद्धापूर्वक समर्पित करते हैं और इसके बाद नए धान का सेवन किया जाता है। इस प्रकार; देवमोगरा धाम केवल एक स्थानक ही नहीं है, बल्कि आदिजाति समाज की आस्था, परंपरा एवं संस्कृतिक का जीवंत प्रतीक है और स्थानीय प्रदेश के घेरिया (महिला पोशाक में पुरुषों की टोली) होली-धुलंडी के त्योहार के दौरान सवा महीने घर से बाहर निकल कर घर-घर घूमते हैं और घेरिया बनते हैं और नौ रस के श्रृंगार के साथ मुक्त मन से नाच-गान करते हैं। धुलंडी से पूर्व के दिन होली चौक में होलिका प्रज्ज्वलित की जाती है और महिलाएँ भी परंपरागत वेशभूषा में सज्ज होकर कर वाद्ययंत्रों के साथ नाच-गान करते हुए होली के लोले (लोक गीत) गाकर आनंद-उत्सव मनाती हैं।

आदिवासी लोक संस्कृति का अनूठा दर्शन कराता है महाशिवरात्रि का मेला

देवमोगरा में जहाँ राजा पांठा-विनादेव का स्थानक है, वहाँ हर वर्ष महाशिवरात्रि पर एक भव्य गढ़ यात्रा आयोजित की जाती है। इस यात्रा में परंपरागत वाद्ययंत्रों तथा नृत्य के साथ माताजी को गढ़ में जंगलों-पर्वतों के बीच स्थित प्राकृतिक झरने में स्नान कराया जाता है। इतना ही नहीं; माताजी की पूजा करके आगामी वर्ष के लिए खेतीबाड़ी और बरसाती मौसम का (होलको ठोक कर) अनुमान लगाया जाता है। हजारों श्रद्धालु इस अनुमान के अनुसार खेतीबाड़ी का पूर्व आयोजन करते हैं। मेले के दौरान माता के प्रांगण में स्थित काकड़ के पेड़ पर एक ही रात में फूल आ जाते हैं। सुबह भक्त उसके दर्शन करते हैं और मानते हैं कि जिस दिशा में सबसे ज्यादा फूल हों, उस दिशा में वर्ष के दौरान खेतीबाड़ी का काम अच्छा होगा। प्रतिवर्ष माघ महीने के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तथा महाशिवरात्रि के एक दिन पूर्व से लगातार पाँच दिनों तक लगने वाला यह मेला आदिवासी लोक संस्कृति का अनूठा दर्शन कराता है। इस मेले में लाखों भक्त माताजी के दर्शन के लिए जुटते हैं, जो वास्तव में आह्लादक दृश्य होता है। इस मंदिर में बाईं ओर श्यामवर्णी महाकाली माता की मूर्ति के भी लोग दर्शन करते हैं। इस प्रकार; एक ही मंदिर में दो माताजी विराजमान हैं।

राजमार्गों तथा नगरों-महानगरों के सड़क मार्गों की गुणवत्ता से समझौता बर्दाश्त नहीं किए जाएगा : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

मुख्यमंत्री ने उप मुख्यमंत्री, वित्त मंत्री तथा मुख्य सचिव की उपस्थिति में आयोजित उच्च स्तरीय बैठक में दिए दिशानिर्देश

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने स्पष्ट दिशानिर्देश दिए हैं कि राज्य में राजमार्गों तथा नगरों-महानगरों में सड़क मार्ग कार्यों की गुणवत्ता से कम्प्रोमाइज या समझौता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

श्री पटेल ने गुरुवार को गांधीनगर में उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, वित्त मंत्री श्री कनुभाई देसाई तथा मुख्य सचिव श्री एम. के. दास की उपस्थिति में आयोजित बैठक में ये दिशानिर्देश दिए। बैठक में महानगरों के महापौर, महानगर पालिकाओं की स्थायी समितियों के अध्यक्ष, महानगर पालिकाओं के आयुक्त तथा क्षेत्रीय महानगर पालिका आयुक्त वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े और उन्होंने अपने नगरों-महानगरों की सड़क मार्गों की स्थिति का विवरण दिया।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जब से शासन दायित्व संभाला है, तब से राज्य में सड़क मार्गों-पुलों के निर्माण में गुणवत्ता पर निरंतर बल दिया है।

ऐसे जन हित के कार्यों में क्वॉलिटी में कम्प्रोमाइज या समझौता करने की बात बर्दाश्त नहीं की जाती है। मुख्यमंत्री ने अनेक बार इसकी प्रतीति भी कराई है। हाल ही में 3 ठेकेदारों को ब्लैक लिस्ट

भी किया गया है।

इतना ही नहीं; हल्की गुणवत्ता के कार्य करने वाले 13 से अधिक ठेकेदारों को इस वर्ष ब्लैक लिस्ट करने तक के कड़े दंडात्मक कदम भी मुख्यमंत्री के सीधे निर्देश पर उठाए गए हैं।

श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार दोपहर को आयोजित इस बैठक मे स्पष्ट रूप से कहा कि सड़कों पर के पोटहोल्स भरने के कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर शुरू किया जाए। इतना ही नहीं; सम्बद्ध अधिकारी, मनपा आयुक्त व उपायुक्त नियमित रूप से फील्ड विजिट कर कार्यों की गुणवत्ता की जाँच करते रहें और 30 नवंबर तक सड़क मार्गों की समग्र स्थिति रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

उन्होंने कहा कि जिन स्थानों पर पुलों के कार्य हो रहे हों, वहाँ डाइवर्जन के लिए आरसीसी रोड बने, जिससे सम्बद्ध कार्य पूरा होने तक नागरिकों को परिवहन में कोई असुविधा न हो। इसके लिए भी उन्होंने बैठक में सम्बद्ध अधिकारियों को निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने हाल ही में राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में भी प्रभारी मंत्रियों को उनके जिलों में सड़कों की स्थिति की सम्बद्ध अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर 30 नवंबर तक स्थिति रिपोर्ट देने के निर्देश दिए थे। श्री पटेल ने इस उच्च स्तरीय बैठक में यह भी कहा कि जो सड़क मार्ग मैंटेनेंस गारंटी पीरियड में टूट जाएँ, उनके ठेकेदारों को तत्काल ब्लैक लिस्ट करने सहित कड़ी कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने इस बैठक में कहा कि शहरों में रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन, मार्केट जैसे स्थलों, जहाँ लोगों की अधिक आवाजाही रहती हो, वहाँ शहरी प्रशासन तथा सड़क एवं भवन विभाग इस तरह सड़क मरम्मत के कार्य करे, जिसकी लोगों को अनुभूति हो। उन्होंने यह भी कहा कि सड़क मरम्मत को लेकर मिलने वाली शिकायतों का त्वरित निरावण, साथ ही साथ अन्य मरम्मत एवं नए सड़क निर्माण कार्य भी होते रहना जरूरी हैं।

इस उच्च स्तरीय बैठक में मुख्यमंत्री के सलाहकार श्री एस. एस. राठौड़, शहरी विकास विभाग के प्रधान सचिव श्री एम. थेन्नारसन, मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह, कमिशनर ऑफ म्युनिसिपालिटीज सुश्री रेम्या मोहन, सड़क एवं भवन विभाग के सचिव श्री प्रभात पटेलिया, मुख्यमंत्री के विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी) श्री धीरज पारेख, सड़क एवं भवन तथा शहरी विकास विभाग के सम्बद्ध अधिकारी उपस्थित रहे

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया एवं पश्चिम रेलवे के मध्य हुए समझौता ज्ञापन (MOU) के अंतर्गत तीन रेल कर्मचारियों के परिवार को को वित्तीय सहायता राशि का वितरण

(जीएनएस)। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया और पश्चिम रेलवे के मध्य हुए समझौता ज्ञापन (MOU) के अंतर्गत भावनगर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें यूनियन बैंक की ओर से मृतक रेल कर्मचारियों के परिजनों को वित्तीय सहायता राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के वरिष्ठ अधिकारियों ने उक्त समझौते की प्रमुख शर्तों, लाभों एवं बीमा सुरक्षा से संबंधित जानकारियाँ विस्तार से साझा कीं। यह पहल रेलवे कर्मचारियों को सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान मृतक कर्मचारी श्री नरेंद्रसिंह जे गोहिल, कार्यालय अधीक्षक, भावनगर टर्मिनस के आश्रित को अनुकम्पा नियुक्ति पत्र मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के द्वारा दिया गया । साथ ही, मंडल रेल प्रबंधक तथा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के अधिकारियों द्वारा श्री नरेंद्र सिंह गोहिल के परिजनों को 1 करोड़ 15 लाख की राशि का चेक संयुक्त रूप से प्रदान किया गया। इसके

अतिरिक्त श्री विपिनभाई मकवाना, कार्यालय अधीक्षक, भावनगर मंडल कार्यालय के परिजन को 10 लाख की राशि एवं श्री किशोरसिंह, कनिष्ठ अभियंता, भावनगर टर्मिनस के परिजन को 10 लाख की राशि Union Bank of India की ओर से प्रदान की गई।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने की। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा सहित सभी शाखा अधिकारी एवं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा जी ने अपने संबोधन में कहा कि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के रेलकर्मियों एवं उनके परिजनों के हित में की गई यह पहल न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है, बल्कि बैंक और रेलवे के बीच आपसी सहयोग एवं विश्वास को भी और मजबूत करती है।"

कार्यक्रम का आयोजन वरिष्ठ मंडल कार्मिकअधिकारी श्री हुबलाल जगन के मार्गदर्शन में किया गया एवं संचालन सहायक कार्मिक अधिकारी श्री वाई राधेश्याम द्वारा किया गया । अंत में बैंक एवं रेलवे के अधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

श्वेत क्रांति से राष्ट्र क्रांति की ओर प्रयाण

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने वर्चुअल माध्यम से सैनिक स्कूल का लोकार्पण किया

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह :-

▸▸ भारत की आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई को पूरी दुनिया ने स्वीकार किया है और इस लड़ाई में वैश्विक स्तर पर प्रधानमंत्री का नाम शीर्ष पर

▸▸ सहकारी क्षेत्र के अग्रणियों की मेहनत से आज देश और राज्य के किसानों, पशुपालकों और गांवों के लिए समृद्धि के द्वार खुले हैं

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▸▸ प्रबल राष्ट्रभावना उत्तर गुजरात का स्वभाव रहा है

▸▸ सैनिक स्कूल 'राष्ट्रहित सर्वोपरि' के ध्येय के साथ भावी पीढ़ी के निर्माण का माध्यम बनेगा

▸▸मुख्यमंत्री के करकमलों से राष्ट्रीय भावना, साहस, अनुशासन और मां भारती के लिए समर्पित श्री मोतीभाई आर चौधरी सैनिक स्कूल का लोकार्पण

▸▸30 मीट्रिक टन दैनिक प्रोसेसिंग तथा पैकेजिंग की क्षमता वाले खेरालू सागर ऑर्गेनिक प्लांट का ई-लोकार्पण

(जीएनएस)। गांधीनगर : केंद्रीय गृह एवं सहकरिता मंत्री श्री अमित शाह की वर्चुअल उपस्थिति तथा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रेरक उपस्थिति में गुरुवार को मेहसाणा जिले के बोरियावी में श्री मोतीभाई आर. चौधरी सागर सैनिक स्कूल और सागर ऑर्गेनिक प्लांट का लोकार्पण समारोह आयोजित हुआ। समारोह को वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने दिल्ली में हुए बम विस्फोट में जान गंवाने वाले मृतकों को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके परिजनों के प्रति गहरी अपनी संवेदनाएं व्यक्त की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कृत्य में शामिल लोगों को कठोर से कठोर से सजा दिलाने के लिए सरकार संकल्पबद्ध है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई को पूरी दुनिया ने स्वीकार किया है और इस लड़ाई में वैश्विक स्तर पर प्रधानमंत्री का नाम शीर्ष पर है।

उन्होंने सागर सैनिक स्कूल के लोकार्पण अवसर पर कहा कि मोतीभाई चौधरी की सादगी और आदर्श जीवन सहकारी क्षेत्र के अग्रणियों के लिए मार्गदर्शक बना है, सहकारी क्षेत्र के ऐसे अनेकों अग्रणियों की मेहनत से आज देश और राज्य के किसानों, पशुपालकों और गांवों के लिए समृद्धि के द्वार खुल गए हैं।

केंद्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री के संकल्प के चलते आज सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के आधार पर देश में 100 नए सैनिक स्कूलों का निर्माण हुआ है, जिससे राष्ट्र के बालक सेना में पहुंच रहे हैं।

केंद्रीय मंत्री श्री अमित शाह ने खेरालू में ऑर्गेनिक प्लांट के लोकार्पण अवसर पर कहा कि इस प्लांट से किसानों की आय में सुधार के साथ-साथ देश के नागरिकों के स्वास्थ्य में भी सुधार होगा। अमूल जैसे विश्वसनीय ब्रांड से वैश्विक स्तर पर इन उत्पादों की मांग होगी, जिससे प्राकृतिक-ऑर्गेनिक उत्पाद उगाने वाले किसान समृद्ध होंगे। उन्होंने किसानों से अपने परिवार के लिए ऑर्गेनिक उत्पादों का उपभोग करने की भी अपील की।

केंद्रीय मंत्री ने दूधसागर डेयरी के सहकारी मॉडल की बात करते हुए कहा कि 1960 में 3300 लीटर की क्षमता के साथ शुरू हुई यह डेयरी आज 35 लाख लीटर दूध का उत्पादन कर रही

है। दस लाख उत्पादकों के साथ 8000 करोड़ रुपए के टर्नओवर वाली इस डेयरी के माध्यम से राज्य की महिलाएं आत्मनिर्भर बनी हैं और राष्ट्र के विकास में देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अपना योगदान दे रही हैं।

केंद्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि दूध सागर डेयरी और बनास डेयरी अर्थव्यवस्था के बदलाव का सहकारी क्षेत्र का मॉडल हैं। उन्होंने राज्य के डेयरी मॉडल को समझने के लिए देश के 50 सांसदों द्वारा किए गए बनासकांठा के दौरे के बारे में भी चर्चा की।

उन्होंने देश में सहकारिता क्षेत्र में गढ़े गए अनेक नए आयामों के बारे में विस्तार से बताया और सहकारी क्षेत्र में गांवों को मजबूत बनाने के लिए की जा रही अनेक नई पहलों के विषय में भी विस्तार से जानकारी दी।

केंद्रीय मंत्री ने बेमौसम बारिश के चलते राज्य सरकार द्वारा घोषित पैकेज का स्वागत किया और इस उदार पैकेज की घोषणा के लिए मुख्यमंत्री सहित मंत्रिमंडल को बधाई दी। उन्होंने कहा कि सरकार ने किसानों की इस विकट परिस्थिति में सरकार उनके साथ खड़े रहकर और अभूतपूर्व पैकेज की घोषणा कर किसानों का आशीर्वाद प्राप्त किया है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि गुजरात में बेमौसम बारिश के कारण हुए नुकसान के मद्देनजर किसानों के साथ खड़े रहने के लिए डबल इंजन सरकार ने 10,000 करोड़ रुपए का ऐतिहासिक राहत पैकेज घोषित किया है। उन्होंने कहा कि इस सहायता से किसानों की सारी मुश्किलें दूर नहीं होंगी, लेकिन उन्हें सहारा अवश्य मिलेगा। ऐसी कठिन परिस्थिति में केंद्र और राज्य सरकार हमेशा किसानों के साथ खड़ी रही हैं।

उन्होंने आगे समर्थन मूल्य पर खरीद की चर्चा करते हुए कहा कि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के हिसाब से किसी भी फसल की 25 फीसदी खरीदी की जा सकती है, लेकिन इस विषय में प्रधानमंत्री से गुहार लगाने के बाद किसानों को खरीदी में भी छूट दी गई है। इसके अंतर्गत स्टॉक की मंजूरी इस प्रकार दी गई है, ताकि प्रति किसान 125 मन मूंगफली की खरीदी की जा सके, इससे किसानों को फायदा होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने ऑपरेशन सिंदूर से भारत की सैन्य शक्ति का विश्व को परिचय दिया है। इस वर्ष राष्ट्र भावना की चेतना जगाने वाले अनेक उत्सव मनाए जा रहे हैं। सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती, भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती, वंदे मातरम्@150, पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के शताब्दी वर्ष, संविधान अंगीकरण के 75 वर्ष सहित राष्ट्रीय चेतना जगाने

वाले उत्सवों को मनाए जाने के साथ दूधसागर डेयरी द्वारा सैनिक स्कूल का उद्घाटन भी राष्ट्र भावना उजागर करने वाली गौरवपूर्ण घड़ी है।

श्री पटेल ने जोड़ा कि प्रबल राष्ट्र भावना उत्तर गुजरात का स्वभाव रहा है। ऐसे में श्वेत क्रांति की ख्याति दिलाने वाले सहाकारिता अग्रणी एवं दूधसागर डेयरी के पूर्व अध्यक्ष श्री मोतीभाई चौधरी के नाम से कार्यरत हुआ यह सैनिक स्कूल राष्ट्रहित सर्वोपरि ध्येय के साथ भावी पीढ़ी के निर्माण का माध्यम बनेगा। मोतीभाई चौधरी के जन्म शताब्दी वर्ष में शिलान्यस्त हुए इस सैनिक स्कूल का अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष में लोकार्पण होना भी शुभ संयोग है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा में उसके सुरक्षा बलों की सैन्य सज्जता महत्वपूर्ण होती है। ऐसी सज्जता अनुशासन, देशभक्ति के भाव तथा स्कूली शिक्षा का समन्वय सैनिक स्कूल में होता है। देशभक्ति के रंग में रंगे ऐसे लगभग 100 सैनिक स्कूलों को मंजूरी दी गई है, जिनमें नई शिक्षा नीति के अनुसार विद्यार्थियों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा दी जाएगी। ऑर्गेनिक प्लांट के बारे में उन्होंने कहा कि किसानों के सशक्तिकरण की आज एक नई परियोजना जुड़ी है। सागर ऑर्गेनिक प्लांट-खेरालू के लोकार्पण से इस प्लांट में तैयार होने वाले ऑर्गेनिक अनाज, दाल, मसालों आदि उत्पादों की अमूल ब्रैंड तले बिक्री होने वाली है, जिसकी दैनिक 30 टन उत्पादन क्षमता है। ऑर्गेनिक प्लांट में तैयार होन वाले अनाज, दाल, मसाले स्वदेशी उत्पादों व उनके उपयोग को गति देंगे।

इस अवसर राज्य के सहकारिता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के मार्गदर्शन में आज सहकारिता विभाग विकास की नई ऊंचाइयां पार कर रहा है। साथ ही देश के प्रथम सहकारिता मंत्री के रूप में श्री शाह ने देश के सहकारिता क्षेत्र के ढांचे को मजबूत करने के लिए अनेक नए उपक्रम शुरू कराए हैं। देश के सहकारिता क्षेत्र में 'सहकार से समृद्धि' के मंत्र को साकार करने वाले व्यापक परिणाम हम देख रहे हैं, जिसमें आज सैनिक स्कूल का लोकार्पण श्वेत क्रांति से राष्ट्र क्रांति की ओर पहल प्रेरणादायी है।

उन्होंने बेमौसम बारिश के चलते राज्य सरकार द्वारा सहायता पैकेज की घोषणा के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि ऐतिहासिक पैकेज के साथ ऐतिहासिक प्रस्ताव कर शुक्रवार से किसानों के फॉर्म भरने का कार्य शुरू हो जाएगा, जिससे तीव्र गति से किसानों को सहायता मिलेगी। इसके लिए सरकार कटिबद्ध बनी है। उन्होंने कहा कि सहायता पैकेज में कोई किसान वंचित न रह जाए, इसकी चिंता सरकार द्वारा की गई

है। इसके लिए शुक्रवार से ग्रामीण स्तर पर फॉर्म भरने का कार्य शुरू होगा और किसानों को तत्काल सहायता मिलेगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने श्री मोतीभाई आर. चौधरी सागर सैनिक स्कूल का तकती अनावरण कर लोकार्पण किया। इसके बाद उन्होंने सैनिक स्कूल के विद्यार्थियों के साथ सहज संवाद कर सैनिक स्कूल में विद्यार्थियों के अभ्यास तथा स्कूल में कराई जाने वाली गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

इस कार्यक्रम में प्राकृतिक उत्पादन करने वाले किसानों तथा डेयरी के बीच महानुभावों के करकमलों से एमओयू किए गए। इसके अलावा, दूधसागर डेयरी के सहयोग से नवाचार से समृद्धि प्राप्त करने वालीं आशाबेन प्रजापति का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर दूधसागर डेयरी के अध्यक्ष श्री अशोकभाई चौधरी ने स्वागत संबोधन करते हुए डेयरी की उपलब्धियों तथा सैनिक स्कूल व ऑर्गेनिक प्लांट के बारे में जानकारी दी। यहाँ उल्लेखनीय है कि दूधसागर डेयरी तथा दूधसागर रिसर्च एंड डेवलपमेंट एसोसिएशन (दुरडा) द्वारा लगभग 20 बीघा भूमि में निर्मित ग्रीन फील्ड परिसर में मोतीभाई आर. चौधरी सैनिक स्कूल का निर्माण किया गया है। इसमें कक्षा 6 से 12 के 750 विद्यार्थियों के पढ़ने, रहने, खेल-कूद तथा अन्य गतिविधियों के लिए परिसर का निर्माण किया गया है। इसके अलावा, दूधसागर डेयरी मेहसाणा द्वारा नए सागर ऑर्गेनिक प्लांट-खेरालू का भी ई-लोकार्पण किया गया है। इस प्लांट में ऑर्गेनिक कृषि उत्पाद किसानों से उचित मूल्य पर खरीद कर ग्राहकों तक पहुंचाने की व्यवस्था की गई है। प्रतिदिन 30 मैट्रिक टन प्रोसेसिंग तथा पैकेजिंग की व्यवस्था वाले आधुनिक प्लांट और छोटे उपभोक्ता उन्मुखी पैक तथा पैकिंग की व्यवस्था से युक्त प्लांट का निर्माण किया गया है।

इस कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी, ऊर्जा मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल, पूर्व मंत्री श्री बलवंतसिंह राजपूत, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री तृषाबेन पटेल, सांसद सर्वश्री हरिभाई पटेल, भरतसिंह डाभी, मयंकभाई नायक, पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री नीतिनभाई पटेल, विधायक सर्वश्री मुकेशभाई पटेल, किरीटभाई पटेल, सरदार चौधरी, सुखाजी ठाकोर, राजेन्द्र चावडा, लविंगजी ठाकोर, पूर्व मंत्री श्री दिलीप ठाकोर, अग्रणी सर्वश्री गिरीशभाई राजगोर, वर्षाबेन दोशी, जिला कलेक्टर श्री एस. के. प्रजापति, जिला विकास अधिकारी श्री हसरत जैस्मीन, प्रबंध निदेशक श्री धीरजकुमार चौधरी, उपाध्यक्ष श्री योगेशभाई पटेल, दूधसागर डेयरी के निदेशक, सहकारिता क्षेत्र के अग्रणी सहित महानुभाव और किसान-पशुपालक उपस्थित रहे।

गुटखा थूकने के लिए बस की खिड़की से सिर बाहर निकालते ही तेज रफ्तार एम्बुलेंस ने मारी टक्कर, युवक का सिर धड़ से अलग

(जीएनएस)। राजस्थान के बाड़मेर जिले में गुरुवार को ऐसा हादसा हुआ जिसे सुनकर किसी के भी रोंगटे खड़े हो जाएं। धनाऊ से चोहटन की ओर जा रही एक बस में 18 वर्षीय युवक गुटखा चबाते हुए सफर कर रहा था। गुटखे का पीक थूकने के लिए उसने जैसे ही बस की पिछली खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला, उसी क्षण सामने से आ रही पशुपालन विभाग की एम्बुलेंस उसे इतनी जोरदार टक्कर मार गई कि पलभर में उसका सिर धड़ से अलग हो गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसा इतना भयावह था कि बस में बैठी सवारियाँ चीख उठीं और कुछ क्षणों के लिए पूरे कोच में दहशत और सन्नाटा पसर गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बस संकरी सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी और उसी समय सामने से तेज गति में एम्बुलेंस आ रही थी। सड़क इतनी तंग थी कि दोनों वाहन बेहद करीब से एक-दूसरे के पास से गुजर रहे थे। इसी दौरान पीछे की सीट के पास बैठा रहमतुल्लाह सुलेमान सोनियाला, निवासी बिसासर धनाऊ, गुटखा थूकने के लिए बार-बार सिर बाहर निकाल रहा था। आसपास बैठे यात्रियों का कहना है कि उसकी यह हरकत शुरू से ही डर पैदा कर रही थी, क्योंकि वह कई बार तेज रफ्तार वाहनों के बीच सिर बाहर निकालता दिख रहा था। किसी को भी अंदाजा नहीं था कि कुछ ही क्षणों में यह लापरवाही उसकी जीवन लीला समाप्त कर देगी।

जैसे ही रहमतुल्लाह ने अपना सिर खिड़की से बाहर निकाला, सामने से आती एम्बुलेंस का किनारा सीधे उसके सिर से टकरा गया। टक्कर इतनी तीव्र थी कि उसका कटा हुआ सिर कुछ दूरी तक उछलकर गिरा, जबकि शरीर सीट पर ही ढह गया। बस में अचानक इतनी अफरा-

तफरी मच गई कि कई यात्री रोने लगे, कुछ ने अपनी आंखें बंद कर लीं और कई लोग सदमे में एक-दूसरे से लिपट गए। चालक ने तुरंत बस रोकी, मगर तब तक सब कुछ खत्म हो चुका था।

घटना की सूचना मिलते ही धनाऊ थाना पुलिस मौके पर पहुँची और आसपास का क्षेत्र सुरक्षित कर शव को कब्जे में लिया। पुलिस ने 108 एम्बुलेंस मंगाकर शरीर को धनाऊ अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया। अधिकारियों ने बताया कि प्रारंभिक जांच में साफ है कि सड़क एकदम संकरी थी और एम्बुलेंस व बस दोनों बमुश्किल गुजरे, मगर हादसे की मुख्य वजह मृतक द्वारा बार-बार खिड़की से सिर बाहर निकालना ही साबित हुआ। बस में बैठे लोगों ने बताया कि रहमतुल्लाह काफी देर से गुटखा थूकने के लिए सिर बाहर निकाल रहा था और उसे कई यात्रियों ने रोका भी, लेकिन वह अनसुना कर देता था। सभी का कहना था कि उन्हें अंदेशा था कि उसकी यह हरकत किसी दुर्घटना को बुला सकती है, लेकिन किसी को इस तरह के त्रासद अंत की कल्पना भी नहीं थी।यह घटना न सिर्फ लापरवाही का नतीजा है, बल्कि सड़क सुरक्षा के नियमों की अनदेखी का एक बेहद काला उदाहरण भी है। यात्रा के दौरान बस की खिड़की से सिर या हाथ बाहर निकालने जैसी छोटी सी गलती कितनी भयानक हो सकती है, इसका यह हादसा जीता-जागता सबूत है। यह भी सच है कि गुटखा जैसे मादक पदार्थों की वजह से लोग अक्सर ऐसी हरकतें करते हैं, जो उनके लिए जानलेवा साबित हो जाती हैं। धनाऊ पुलिस मामले की जांच में जुटी है और घटना से जुड़े सभी प्रश्नों के उत्तर जुटा रही है। परिजनों को सूचना दे दी गई है और पूरे गांव में इस घटना के बाद मातम पसरा हुआ है। यह हादसा हर उस व्यक्ति के लिए चेतावनी है जो यात्रा के दौरान खिड़की से सिर या हाथ बाहर निकालने की लापरवाही करता है। कभी-कभी एक क्षण की चूक पूरे जीवन की कीमत बन जाती है — और बाड़मेर की यह दर्दनाक घटना उसी की भयावह मिसाल है।

जयपुर में तांत्रिक दंपती का अंधविश्वास का फंदा, तीन साल तक परिवार से जादू-टोना करवाकर 1 करोड़ रुपये ठगे

(जीएनएस)। जयपुर में अंधविश्वास, मानसिक शोषण और आर्थिक ठगी का ऐसा मामला सामने आया है जिसने पूरे शहर को दहला दिया है। विद्याधर नगर थाना क्षेत्र में रहने वाले एक परिवार ने आरोप लगाया है कि एक कथित तांत्रिक अंबिका प्रसाद और उसकी पत्नी विजया शर्मा ने भूत-प्रेत और जादू-टोने के बहाने उन्हें तीन साल तक मानसिक रूप से कैद जैसा बनाकर लगभग 1 करोड़ रुपये हड़प लिए। परिवार के अनुसार तांत्रिक दंपती ने इतना गहरा विश्वास जाल बिछाया कि पीड़ित पति-पत्नी उनकी हर बात पर यकीन करते गए और धीरे-धीरे पूरे परिवार को अपने नियंत्रण में ले लिया। शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि उनकी शादी वर्ष 2008 में हुई थी और सबकुछ सामान्य चल रहा था, लेकिन साल 2022 में अचानक व्यापार में मंदी आई और घर में परेशानियाँ बढ़ने लगीं। इसी दौरान ससुराल पक्ष के संपर्क के जरिए तांत्रिक अंबिका प्रसाद और उसकी पत्नी उनके घर पहुँचे। उन्होंने आते ही परिवार के कुछ निजी मामलों और पुराने घटनाक्रमों को बताकर ऐसा माहौल बना दिया कि पीड़ित परिवार को लगा कि सचमुच कोई अदृश्य शक्ति उनके घर को प्रभावित कर रही है। इसके बाद तांत्रिक दंपती ने दावा किया कि परिवार के ऊपर "भूत-प्रेत का साया" है और वे इसे हटाने की विशेष 'विद्या' रखते हैं।

पीड़ित ने बताया कि अगस्त 2022 में तांत्रिक ने उसकी पत्नी को बीमारी से पीड़ित बताकर डॉक्टर की दवा बंद करवा दी और अपनी कथित चमत्कारी औषधियां शुरू कर दीं। इलाज का रहस्य उजागर करने पर जान से मारने की धमकी देकर लगभग 2 लाख रुपये तुरंत ले लिए। जब पीड़ित ने डॉक्टर को दिखाने की बात की तो तांत्रिक दंपती नाराज हो गए और धीरे-धीरे परिवार को समाज और रिश्तेदारों से काटने लगे। वे हर बात पर डराते-धमकाते और कहते कि इलाज में बाधा डालने से "घर पर भारी संकट" आ जाएगा।

नवंबर 2022 में मामला और भयानक रूप ले गया। तांत्रिकों ने पीड़ित की पत्नी को कुछ दिनों के लिए अपने पास रख लिया और फिर एक वीडियो दिखाया, जिसमें उसकी पत्नी किसी भूत-प्रेत के वश में होने का नाटक कर रही थी। यह वीडियो परिवार पर दबाव बनाने के लिए बनाया गया था। जब परिवार उसे वापस लाने पहुँचा तो तांत्रिक दंपती ने उसे अपना "अधिकार" बताकर रोक लिया और कहा कि उसकी दशा की पूर्ण सुधार के लिए वह उनके पास ही रहेगी।

शिकायत में यह भी कहा गया है कि तीन वर्षों तक लगातार भ्रम फैलाकर, नकली अनुष्ठानों के नाम पर, तांत्रिक दंपती बार-बार पैसे मांगते रहे। शुरुआत छोटे-छोटे खर्चों से हुई, फिर बड़े अनुष्ठानों और विशेष पूजा-पाठ के नाम पर लाखों रुपये लिए गए। धीरे-धीरे यह रकम जोड़कर लगभग एक करोड़ रुपये तक पहुंच गई। जब परिवार आर्थिक रूप से टूटने लगा और उन्होंने पैसा वापस मांगने की कोशिश की, तो तांत्रिक दंपती ने दंपति को बदनाम करने और वीडियो वायरल करने की धमकी देकर ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया।

नोएडा में दो युवाओं की आत्महत्या से सनसनी, छात्र और कंपनी कर्मचारी ने अलग–अलग घटनाओं में दी जान

(जीएनएस)। नोएडा में बुधवार का दिन बेहद दुखद साबित हुआ, जब गौतमबुद्ध नगर जिले में दो अलग-अलग आत्महत्या की घटनाओं ने शहर को स्तब्ध कर दिया। एक ओर एक निजी कंपनी में कार्यरत 40 वर्षीय कर्मचारी ने अपने फ्लैट में फांसी लगाकर जीवन समाप्त कर लिया, वहीं दूसरी ओर गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय का 20 वर्षीय छात्र हॉस्टल की छत से कूदकर अपनी जान दे बैठा। दोनों घटनाओं ने परिवारों, दोस्तों और स्थानीय लोगों को गहरे सदमे में डाल दिया है। पुलिस ने दोनों मामलों में जांच शुरू कर दी है और आत्महत्या के पीछे के कारणों की तलाश की जा रही है। पहली घटना थाना बिसरख क्षेत्र की जेएम फ्लोरेंस सोसाइटी की है, जहां निवास करने वाले 40 वर्षीय दिवाकर सिंह ने अपने फ्लैट में पंखे से लटककर आत्महत्या कर ली। पुलिस के अनुसार दिवाकर हरियाणा की एक कंपनी में कार्यरत थे, जबकि उनकी पत्नी भी नौकरी करती हैं। घटना के समय पत्नी ड्यूटी पर थीं और दिवाकर घर में अकेले थे। देर शाम जब पत्नी घर लौटीं तो उन्होंने

अपने पति को पंखे से लटका हुआ पाया और घबराकर तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस टीम मौके पर पहुँची और शव को नीचे उतवाकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना स्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है, जिसके चलते आत्महत्या के कारणों को लेकर जांच जारी है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि सभी पहलुओं की पड़ताल की जा रही है और परिवार से भी बातचीत की गई है, जिससे यह पता लगाया जा सके कि दिवाकर किसी मानसिक तनाव या आर्थिक परेशानी से जूझ रहे थे या नहीं। दूसरी घटना थाना ईकोटेक-1 क्षेत्र की रामशरणदास हॉस्टल की है, जहां गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में बीए की पढ़ाई कर रहे 20 वर्षीय छात्र धीरज तिवारी ने हॉस्टल की छत से छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली। धीरज मूल रूप से हरियाणा के सोनीपत जिले के उत्तम नगर निवासी थे और कुछ समय पहले ही पढ़ाई के लिए नोएडा आए थे। पुलिस के अनुसार घटना के बाद छात्र को गंभीर हालत में जिम्स अस्पताल, कासना ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। हॉस्टल के विद्यार्थियों और परिचितों में इस घटना से खौफ और सदमा फैल गया है। प्रारंभिक जांच में आत्महत्या की पुष्टि हुई है, लेकिन पुलिस ने स्पष्ट किया है कि अभी तक ऐसी कोई ठोस वजह सामने नहीं आई है, जिससे यह समझा जा सके कि छात्र ने इतना कठोर कदम क्यों उठाया। घटना की जानकारी मिलते ही उसके परिजनों को सूचित किया गया और वे रात में ही नोएडा पहुंच गए। परिवार का रो-रोकर बुरा हाल है। दोनों ही घटनाओं ने नोएडा के लोगों को गहरे दुख और चिंता में डाल दिया है। शहर में यह सवाल भी उठ रहा है कि कामकाजी लोगों और विद्यार्थियों में बढ़ते मानसिक तनाव के कारण आत्महत्या जैसी घटनाएं क्यों बढ़ रही हैं।

साबरमती एक्सप्रेस में धड़ाधड़ टिकट चेकिंग, 275 यात्री बिना टिकट पकड़े गए, रेलवे ने वसूले 1.96 लाख रुपये

(जीएनएस)। उत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल में बुधवार का दिन उन यात्रियों के लिए भारी पड़ गया, जो बिना टिकट यात्रा को अपनी आदत मान चुके थे। साबरमती एक्सप्रेस (20939/20940) के लखनऊ से सुलतानपुर और सुलतानपुर से लखनऊ की एक ही ट्रिप में रेलवे की सघन टिकट जांच टीम ने 275 यात्रियों को बिना टिकट या अनियमित टिकट के साथ पकड़ा, जिससे कुल 1,96,400 रुपये का भारी-भरकम जुर्माना वसूला गया। रेलवे अधिकारियों ने इस कार्रवाई को सिर्फ एक अभियान नहीं, बल्कि यात्रियों को कड़ा संदेश देने की दिशा में उठाया गया निर्णायक कदम बताया है।

यह पूरी कार्रवाई वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक कुलदीप तिवारी के कड़े निर्देशों के तहत की गई, जिन्होंने हाल ही में बिना टिकट यात्रा रोकने के लिए पूरे मंडल में कड़ी निगरानी का आदेश दिया था। इन्हीं निर्देशों के बाद बनी स्पेशल टिकट चेकिंग टीम में सात टिकट निरीक्षक और रेलवे सुरक्षा बल

(RPF) के दो जवान शामिल किए गए थे। टीम बुधवार सुबह ट्रेन के लखनऊ से रवाना होने के बाद ही हर कोच में पहुँच गई और दोनों दिशाओं में बिना रुके लगातार जांच अभियान चलाया गया।

जैसे ही सुलतानपुर से लखनऊ लौट रही साबरमती एक्सप्रेस में चेकिंग शुरू की गई, कोचों में अचानक अफरातफरी फैल गई। कई यात्री सीटों पर औंधे मुँह टिकट खोजते नजर आए, कुछ ने जेबों में पुराने या गलत तारीख वाले टिकट दबा रखे थे। कुछ यात्री स्लीपर और एसी कोच में निचली श्रेणी का जनरल टिकट लेकर यात्रा कर रहे थे, जिन्हें मौके पर ही भारतीय रेलवे अधिनियम के तहत अतिरिक्त किराए और भारी जुर्माने का भुगतान करना पड़ा। चेकिंग टीम किसी बहाने या सफाई के झांसे में नहीं आई और नियम के अनुसार सभी पर त्वरित कार्रवाई की गई। एक यात्री ने नाम न बताने की शर्त पर बताया कि वह सोचकर चला था कि छोटा रूट है, शायद कोई चेकिंग नहीं होगी, लेकिन आज उसे समझ आ गया कि बिना टिकट यात्रा कर वह खुद भी जोखिम में पड़ रहा था और नियम तोड़कर गलत कर रहा था। कई यात्री जहां शांतिपूर्वक जुर्माना भरकर आगे बढ़ गए, वहीं कुछ कोचों में यात्रियों के स्वर धीमे पड़ते देखे गए, पर रेलवे कर्मचारियों ने किसी की दलील स्वीकार नहीं की और साफ कहा कि नियम सबके लिए एक जैसा है।

इस पूरी कार्रवाई के बाद सीनियर DCM कुलदीप तिवारी ने बयान जारी कर कहा कि बिना टिकट यात्रा न सिर्फ गैर-कानूनी है बल्कि यह सुरक्षा नियमों का भी गंभीर उल्लंघन है। उन्होंने कहा कि यदि कोई नियमों की अनदेखी करता है, तो वह न केवल खुद के लिए बल्कि पूरी ट्रेन की व्यवस्था के लिए खतरा पैदा करता है। उन्होंने स्पष्ट चेतावनी देते हुए कहा कि ऐसे सघन अभियान आगे भी जारी रहेंगे और यात्रियों को यात्रा से पहले अपना टिकट अवश्य सुनिश्चित करना चाहिए, वरना जुर्माना और कानूनी कार्रवाई दोनों के लिए तैयार रहना होगा।

लखनऊ मंडल ने यह भी घोषणा की है कि आगामी दिनों में अवध एक्सप्रेस, पद्मावत एक्सप्रेस और विभिन्न अन्य रूटों पर भी इसी तरह की आकस्मिक और सख्त टिकट जांच अभियान चलाए जाएंगे। किस दिन, किस ट्रेन और किस रूट पर चेकिंग होगी — यह पूरी तरह सरप्राइज रहेगा, ताकि यात्री कभी भी बिना टिकट यात्रा करने का जोखिम न लें। रेलवे अधिकारियों ने साफ कहा है कि अब बिना टिकट यात्रा करने वालों के लिए 500 से लेकर 1500 रुपये तक का जुर्माना हर समय तैयार रहेगा, और किसी भी यात्री को यह नहीं मानकर चलना चाहिए कि छोटा रूट होने से चेकिंग नहीं होगी।

इस कार्रवाई ने एक बार फिर साबित किया है कि रेलवे अब बिना टिकट यात्रा को किसी भी स्थिति में बर्दाश्त करने के मूड में नहीं है और आने वाले दिनों में और भी कड़े कदम उठाए जा सकते हैं। यात्रियों के लिए यह एक बड़ा संदेश है कि ट्रेन में चढ़ने से पहले जेब में टिकट होना अब एक विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्य जिम्मेदारी है।

भारत अब मालदीव को सिखाएगा सुशासन का मंत्र, स्मार्ट सिटी और नीति सुधारों पर साझा होगा अनुभव

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत ने मालदीव के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को नए आयाम देने की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए गुरुवार को घोषणा की कि वह अब मालदीव के सरकारी अधिकारियों को सुशासन, स्मार्ट सिटी विकास और प्रशासनिक सुधारों के अपने व्यावहारिक अनुभव से प्रशिक्षित करेगा। प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्यमंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत न केवल प्रशिक्षण बल्कि अपने नीति-निर्माण और विकास मॉडलों को भी साझा करेगा, ताकि दोनों देशों के बीच प्रशासनिक और तकनीकी साझेदारी को और सुदृढ़ बनाया जा सके। राष्ट्रीय सुशासन केंद्र (NGC) में मालदीव के 30 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल से भेंट के दौरान डॉ. सिंह ने कहा कि भारत अब मालदीव के लिए "क्षमता निर्माण सहयोग" का केंद्र बन चुका है। यह प्रतिनिधिमंडल मालदीव के नगर, स्थानीय सरकार और सार्वजनिक कार्य मंत्रालय के राज्यमंत्री अहमद सलीम के नेतृत्व में भारत आया है और मसूरी स्थित राष्ट्रीय सुशासन केंद्र में 3 से 14 नवंबर तक चल रहे "स्मार्ट सिटी मिशन पर क्षमता निर्माण" कार्यक्रम में भाग ले रहा है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत की शासन व्यवस्था में पिछले दशक में जो परिवर्तन हुए हैं, वे न केवल नीति सुधारों

बल्कि तकनीकी नवाचार के परिणाम हैं। उन्होंने बताया कि "प्रधानमंत्री गति शक्ति मिशन", "डिजिटल इंडिया", "स्वच्छ भारत अभियान" और "स्मार्ट सिटी मिशन" जैसे कार्यक्रमों ने शासन की पारदर्शिता, जवाबदेही और दक्षता को नई ऊंचाई दी है। उन्होंने कहा, "हमारा उद्देश्य केवल प्रशिक्षण देना नहीं, बल्कि एक ऐसा भरोसेमंद साझेदारी मॉडल विकसित करना है जो क्षेत्रीय स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा दे।"

मंत्री ने यह भी जोड़ा कि भारत और मालदीव के बीच संबंध केवल पड़ोसी देशों के नहीं बल्कि साझा संस्कृति, इतिहास और समुद्री सीमाओं पर आधारित हैं। "हम एक-दूसरे के विकास में भागीदार हैं, और यही साझेदारी हिंद महासागर क्षेत्र में शांति और प्रगति का आधार बनेगी," उन्होंने कहा।

राष्ट्रीय सुशासन केंद्र (NGC) के महानिदेशक सुरेंद्र कुमार बगड़े ने बताया कि केंद्र ने अब तक 1,200 से अधिक मालदीव के सिविल सेवकों को प्रशिक्षित किया है, जिनमें वरिष्ठ सचिव, स्थायी सचिव और स्थानीय शासन के प्रमुख अधिकारी शामिल हैं। बगड़े ने कहा कि इन कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल तकनीकी प्रशिक्षण नहीं, बल्कि नीति निर्माण, जनभागीदारी और नवाचार आधारित प्रशासन को बढ़ावा देना है।

इस अवसर पर मालदीव के राज्यमंत्री अहमद सलीम ने भारत के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत का "स्मार्ट सिटी मिशन" नागरिक केंद्रित विकास और तकनीकी नवाचार का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने कहा, "भारत ने यह दिखाया है कि कैसे तकनीक, पारदर्शिता और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से शहरी जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। हम चाहते हैं कि मालदीव भी इसी मॉडल को अपनाए और अपने शहरों को टिकाऊ व स्मार्ट बनाए।"

सलीम ने यह भी कहा कि भारत के प्रशिक्षण कार्यक्रमों से मालदीव के अधिकारियों को न केवल प्रशासनिक कौशल मिला है बल्कि नीति निर्माण में व्यापक दृष्टिकोण भी विकसित हुआ है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच अगस्त 2024 में हुए समझौते के नवीनीकरण के बाद सहयोग की नई शुरुआत हुई है और आने वाले वर्षों में इस साझेदारी से क्षेत्र में सुशासन और विकास की नई मिसालें स्थापित होंगी।

भारत सरकार ने स्पष्ट किया है कि इस पहल के तहत समुद्री अर्थव्यवस्था, स्टार्टअप नीति, जलवायु परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा, स्वास्थ्य प्रबंधन और महिला सशक्तीकरण जैसे विषयों पर भी विशेष कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी। यह कदम भारत की "नेबरहुड फर्स्ट" नीति के अनुरूप है, जिसके तहत दक्षिण एशिया के देशों के साथ विकास-आधारित सहयोग को प्राथमिकता दी जा रही है।

भारत और मालदीव के बीच यह साझेदारी न केवल द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करेगी, बल्कि हिंद महासागर क्षेत्र में स्थायी और पारदर्शी शासन मॉडल की दिशा में भी एक नई दिशा तय करेगी।

काकद्वीप में लॉ छात्रा की मौत से सनसनी, वकील के चैंबर में फंदे से लटका मिला शव; हत्या या आत्महत्या? जांच में जुटी पुलिस

पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले में स्थित काकद्वीप थाना क्षेत्र सोमवार को एक दुखद और रहस्यमयी घटना से दहल उठा, जब एक 21 वर्षीय लॉ छात्रा का शव उसके ही मेंटर वकील के चैंबर में फंदे से लटका हुआ मिला। मृतका सोनिया हलधर, जो लॉ कॉलेज की प्रथम वर्ष की छात्रा थी, कोर्ट परिसर स्थित शेख मनोवर आलम के चैंबर में नियमित रूप से प्रैक्टिस के लिए जाती थी। लेकिन आज की सुबह उसके लिए नियति कुछ और ही लिखकर लाई थी।

सुबह रोज़ की तरह वह घर से पढ़ाई के लिए निकली, लेकिन कुछ ही घंटों बाद परिवार को सूचना मिली कि सोनिया का शव वकील के चैंबर में संदिग्ध हालात में मिला है। खबर सुनते ही परिवार के लोग बदहवास हालत में वहां पहुंचे और पुलिस को मामले की जानकारी दी। काकद्वीप थाने की पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची, उन्होंने चैंबर की तलाशी ली और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

घटनास्थल पर पुलिस ने तलाशी के दौरान सोनिया के बैग से एक प्रेम पत्र बरामद किया। पत्र की मौजूदगी ने मामले को और पेचीदा बना दिया है। सोनिया के परिवार का आरोप है कि वह अपने वकील शेख मनोवर आलम के साथ संबंध में थी। परिजनों का दावा है कि इसी रिश्ते के कारण उस पर मानसिक दबाव बढ़ा, जिसके चलते उसकी हत्या भी हो सकती है या उसे आत्महत्या के लिए मजबूर किया गया हो।

परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने वकील शेख मनोवर आलम को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने बताया कि वकील से पूछताछ की जा रही है और किसी भी साक्ष्य को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। हालांकि मौत का असली कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा, लेकिन घटनास्थल की स्थिति और प्रेम पत्र की मौजूदगी कई तरह के सवाल खड़े कर रही है। काकद्वीप पुलिस ने प्रारंभिक तौर पर अप्राकृतिक मौत का मामला दर्ज किया है। साथ ही, चैंबर की CCTV फुटेज, कॉल रिकॉर्ड्स, चैट्स और संबंधों की प्रकृति को ध्यान में रखकर जांच की जा रही है। पुलिस ने कहा कि जो भी तथ्य सामने आएंगे, वही आगे की कार्रवाई तय करेंगे। काकद्वीप जैसे शांत इलाके में घटी यह घटना पूरे क्षेत्र में हलचल मचा चुकी है। कॉलेज के छात्रों से लेकर कोर्ट परिसर तक इस मौत को लेकर गहरी चिंता और असमंजस का माहौल है।

एसी और एलईडी लाइट घटक निर्माण को मिली नई रफ्तार, पीएलआई योजना में 13 कंपनियों ने दिए 1,914 करोड़ निवेश प्रस्ताव

(जीएनएस)। भारत में घरेलू विनिर्माण को मजबूत आधार देने वाली उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना एक बार फिर उद्योग जगत के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अधीन डीपीआईआईटी (उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग) को एयर कंडीशनर और एलईडी लाइट्स के घटकों के निर्माण के लिए इस बार 13 कंपनियों से कुल 1,914 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव मिले हैं, जो भारतीय विनिर्माण क्षेत्र के बदलते चेहरे की तस्दीक करते हैं।

यह खास बात सामने आई है कि इन प्रस्तावों में 50% से अधिक भागीदारी एमएसएमई सेक्टर की है। इससे छोटे और मध्यम उद्योगों में बढ़ते आत्मविश्वास का पता चलता है। आवेदन की यह विंडो 15 सितंबर से 10 नवंबर तक खुली थी और उद्योग जगत से मिले इस सक्रिय प्रतिसाद ने केंद्र सरकार की आत्मनिर्भर भारत दिशा में हो रही प्रगति को और मजबूती दी है।

नए और मौजूदा लाभार्थियों से निवेश की बड़ी घोषणा

मंत्रालय ने बताया कि एक मौजूदा पीएलआई लाभार्थी ने 15 करोड़ रुपये के अतिरिक्त निवेश का प्रस्ताव किया है। इसके अलावा, नौ नई कंपनियों ने एयर कंडीशनर घटक निर्माण पर 1,816 करोड़ रुपये निवेश करने की प्रतिबद्धता जताई है। इन निवेशों का मुख्य फोकस कंप्रेसर, मोटर, हीट एक्सचेंजर, तांबा ट्यूब, एल्यूमिनियम स्टॉक और कंट्रोल असेंबली जैसे उच्च-मूल्य वाले घटकों के घरेलू उत्पादन पर रहेगा।

इसी क्रम में चार कंपनियों ने एलईडी लाइट घटकों—चिप्स, ड्राइवर और हीट सिंक—के निर्माण के लिए 98 करोड़ रुपये निवेश का प्रस्ताव दिया है। यह पहल न केवल आयात पर निर्भरता कम करेगी, बल्कि भारत को उन्नत तकनीक वाले उत्पादों के निर्माण में भी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के स्तर पर खड़ा करेगी।

23 स्थानों पर स्थापित होंगी नई इकाइयाँ

यह नई परियोजनाएँ छह राज्यों के 13 जिलों में स्थित 23 स्थानों पर लगाई जाएंगी। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने बताया कि श्वेत वस्तुओं (White Goods) के लिए पीएलआई योजना के तहत अब तक 80 लाभार्थियों से 10,335 करोड़ रुपये का निवेश प्राप्त हुआ है। इन परियोजनाओं से 1.72 लाख करोड़ रुपये के उत्पादन और लगभग 60,000 प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने की उम्मीद है।

6,238 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ आगे बढ़ रही योजना

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में अप्रैल 2021 में स्वीकृत यह पीएलआई योजना कुल 6,238 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ लागू की गई थी। इस योजना के जरिए एयर कंडीशनर और एलईडी लाइट घटकों का घरेलू विनिर्माण बढ़ाने, आयात को कम करने और भारत में मूल्यवर्धन को 15–20% से बढ़ाकर 75–80% तक ले जाने पर जोर दिया जा रहा है।

बिहार में कल खुलेगा जनादेश का पिटारा, कड़ी सुरक्षा में मतगणना की तैयारी पूरी – 7 करोड़ से अधिक मतों से तय होगा सत्ता का भविष्य

(जीएनएस)। पटना। बिहार में हफ्तों तक चले चुनावी महासंग्राम के बाद अब जनता के फैसले का पल आ गया है। शुक्रवार को राज्य के सभी 38 जिलों में मतगणना होगी, जिसके लिए प्रशासन ने पुख्ता तैयारियां कर ली हैं। सुबह 8 बजे से मतगणना शुरू होगी और राज्य की 243 विधानसभा सीटों पर किस दल का पलड़ा भारी रहेगा, इसका फैसला कुछ ही घंटों में सामने आ जाएगा।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय के अनुसार, कुल 46 मतगणना केंद्रों पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। हर केंद्र पर तीन-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था लागू की गई है — सबसे बाहरी घेरे में राज्य पुलिस बल, दूसरे घेरे में केंद्रीय सुरक्षा बल और सबसे अंदर सीआरपीएफ और विशेष पुलिस बल तैनात रहेंगे। हर मतगणना केंद्र के भीतर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, ताकि हर गतिविधि पर रियल टाइम निगरानी रखी जा सके।

निर्वाचन आयोग ने मतगणना की पारदर्शिता

और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए सख्त दिशा-निर्देश जारी किए हैं। सुबह 8 बजे पहले डाक मतपत्रों की गिनती शुरू होगी, जिसके बाद 8:30 बजे से ईवीएम की सीलें खोली जाएंगी। आयोग ने मतगणना स्थलों पर मोबाइल फोन और किसी भी तरह के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया है। हर केंद्र पर माइक्रो ऑब्जर्वर और केंद्रीय पर्यवेक्षक तैनात किए गए हैं जो हर चरण की रिपोर्ट सीधे निर्वाचन आयोग को भेजेंगे।

इस बार बिहार में कुल 7.45 करोड़ मतदाताओं ने 2,616 प्रत्याशियों की किस्मत ईवीएम में बंद की है। 67.13 प्रतिशत मतदान के साथ राज्य ने नया रिकॉर्ड कायम किया, जो पिछले विधानसभा चुनाव से लगभग चार प्रतिशत अधिक है। यह उत्साहपूर्ण मतदान संकेत देता है कि इस बार जनता ने परिवर्तन की भावना के साथ मतदान किया है।

राजनीतिक गलियारों में हलचल तेज है — महागठबंधन और एनडीए दोनों ही अपनी जीत का दावा कर रहे हैं, जबकि कई सीटों पर त्रिकोणीय और चतुष्कोणीय मुकाबले ने नतीजों को और दिलचस्प बना दिया है। पटना, दरभंगा, गया, मुजफ्फरपुर और भागलपुर जैसे प्रमुख जिलों में मतगणना केंद्रों पर विशेष सुरक्षा व्यवस्था लागू की गई है। संवेदनशील जिलों में अतिरिक्त अर्धसैनिक बलों की तैनाती की गई है ताकि किसी भी अप्रिय घटना से बचा जा सके।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि मतगणना के दौरान किसी भी प्रकार की गड़बड़ी, दबाव या अनुचित गतिविधि पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। "हमारा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हर वोट का सम्मान हो और हर परिणाम निष्पक्ष रूप से सामने आए," उन्होंने कहा।

वहीं, राजनीतिक दलों ने अपने पर्यवेक्षक और एजेंटों को मतगणना स्थलों पर तैनात कर दिया है। सभी की निगाहें उन शुरुआती घंटों पर टिकी हैं जब पहले रुझान सामने आएंगे। राजनीतिक पंडितों का कहना है कि इस बार नतीजे सिर्फ सरकार तय नहीं करेंगे, बल्कि आने वाले वर्षों में बिहार की दिशा और देश की राजनीति की गति भी प्रभावित करेंगे।

राज्यभर में सुरक्षा एजेंसियों को हाई अलर्ट पर रखा गया है। भीड़-भाड़ वाले इलाकों और पार्टी कार्यालयों के आसपास अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की गई है। प्रशासन ने मतगणना के दौरान सोशल मीडिया पर भ्रामक या भड़काऊ पोस्ट डालने वालों के खिलाफ भी निगरानी बढ़ा दी है।

कल जब सुबह 8 बजे ईवीएम खुलेंगी, तो करोड़ों निगाहें टेलीविजन स्क्रीन और समाचार चैनलों पर टिकी होंगी। यह सिर्फ एक चुनाव परिणाम नहीं, बल्कि बिहार के लोकतंत्र की परिपक्वता की परीक्षा होगी। राज्य में सत्ता की बागडोर किसके हाथ जाएगी, इसका फैसला जनता के इन मतों से होगा — और यही तय करेगा कि बिहार का अगला अध्याय किस दिशा में लिखा जाएगा।

रायबरेली कोर्ट में पेश हुए पूर्व मंत्री सोमनाथ भारती, कहा– मेरे खिलाफ राजनीतिक द्वेष से दर्ज हुआ मुकदमा

(जीएनएस)। रायबरेली में गुरुवार का दिन राजनीतिक और कानूनी गतिविधियों के लिहाज़ से बेहद महत्वपूर्ण रहा, जब दिल्ली सरकार में पूर्व विधि एवं न्याय मंत्री और आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता सोमनाथ भारती एमपी–एमएलए विशेष अदालत में व्यक्तिगत रूप से पेश हुए। यह पेशी वर्ष 2021 में दर्ज एक विवादित मामले से जुड़ी थी, जिसकी सुनवाई लंबे समय से चल रही है। अदालत में उनकी मौजूदगी को लेकर सुरक्षा के विशेष इंतज़ाम किए गए थे और परिसर में भारी पुलिस बल तैनात रहा।

सोमनाथ भारती डॉ. विवेक कुमार की अदालत में उपस्थित हुए, जहां उनके अधिवक्ता ने दलील दी कि दिल्ली से हर तारीख पर रायबरेली आना उनके मुवक्किल के लिए अत्यंत कठिन है। उन्होंने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय ने भी भारती को हर सुनवाई पर व्यक्तिगत रूप से उपस्थित रहने से छूट देते हुए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा पेशी की अनुमति दी है। अधिवक्ता ने अदालत से अनुरोध किया कि गैर-हाजिरी को जानबूझकर अनुपस्थित रहना न माना जाए और भारती आरोप तय किए जाने के समय स्वयं मौजूद रहेंगे।

इस बीच शासकीय अधिवक्ता संदीप सिंह ने इस दलील पर आपत्ति प्रकट करते हुए कहा कि बार-बार अनुपस्थिति मामले की गंभीरता को प्रभावित करती है। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद न्यायिक अधिकारी ने भारती के खिलाफ जारी गैर-जमानती वारंट और धारा 82 की कार्यवाही को रद्द कर दिया। अदालत ने मामले की अगली सुनवाई के लिए 24 नवंबर की तारीख निर्धारित की, जिससे साफ है कि न्यायिक प्रक्रिया आगे बढ़ती रहेगी और भारती की उपस्थिति तथा बचाव पर अदालत की कड़ी नजर रहेगी।

यह मामला वर्ष 2021 का है, जब रायबरेली जिला अस्पताल के निरीक्षण के दौरान सोमनाथ भारती द्वारा कथित विवादित टिप्पणी किए जाने पर शहर कोतवाली में मुकदमा दर्ज हुआ था। इस मामले में बाद में उनकी अनुपस्थिति को देखते हुए न्यायालय ने गैर-जमानती वारंट जारी किया था। गुरुवार को अदालत में पेशी के बाद इस वारंट को रद्द कर दिया गया, जिससे भारती को बड़ी राहत मिली है।

अदालत से बाहर मीडिया से बातचीत में सोमनाथ भारती ने पूरे मामले को राजनीतिक साजिश करार दिया। उन्होंने कहा कि उनके खिलाफ दर्ज मुकदमा पूरी तरह राजनीतिक द्वेष से प्रेरित है और इसे विपक्षी नेताओं द्वारा योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ाया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि एक चुनावी कार्यक्रम के दौरान उन पर स्याही फेंकने वाले व्यक्ति पर कोई कार्रवाई नहीं की गई, बल्कि उसे तत्कालीन विधायक राकेश प्रताप सिंह ने 51,000 रुपये का इनाम दिया। भारती के अनुसार, यह घटना और उसके बाद हुई कार्रवाई प्रशासन और सरकार के पक्षपातपूर्ण रवैये की स्पष्ट मिसाल है।

उन्होंने कहा कि वे न्यायपालिका पर पूरा भरोसा रखते हैं और उम्मीद है कि सत्य अंततः सामने आएगा। भारती ने दावा किया कि उनके खिलाफ राजनीतिक हितों के कारण भ्रामक धारणा बनाई जा रही है, लेकिन अदालत की प्रक्रिया सच्चाई को उजागर करेगी।